



संज्ञवत



9

संपादक : डॉ. रामरक्षा मिश्र विमल

Buxar online news 25 may, 25

बक्सर में 'सँझवत' पत्रिका का हुआ लोकार्पण,

साहित्यकारों ने कहा ; 'सँझवत' ने थामी भोजपुरी आलोचना की मशाल

- बक्सर में हुआ पत्रिका का लोकार्पण, साहित्यकारों ने की मुक्त कंठ से सराहना

- भोजपुरी भाषा को नई दिशा देगा 'सँझवत' का यह विशेषांक

बक्सर : भोजपुरी भाषा और साहित्य को समर्पित आलोचना प्रधान पत्रिका 'सँझवत' का लोकार्पण शनिवार को आर्या एकेडमी में आयोजित एक भव्य समारोह में किया गया. पत्रिका का संपादन वरिष्ठ साहित्यकार डॉ. रामरक्षा मिश्र विमल ने किया है. समारोह में जुटे देशभर के साहित्यप्रेमियों और आलोचकों ने इस अंक को भोजपुरी साहित्य में एक ऐतिहासिक पहल बताया. इस अवसर पर भोजपुरी साहित्य मंडल, बक्सर के सचिव डॉ. अरुण मोहन 'भारवि' ने 'सँझवत' की महत्ता पर प्रकाश डालते हुए कहा कि जब मुख्यधारा की मीडिया में क्षेत्रीय भाषाओं को हाशिए पर रखा जा रहा हो, तब ऐसी पत्रिकाएँ सृजन और संवाद की नई राह खोलती हैं. उन्होंने संपादक डॉ. विमल के प्रति आभार व्यक्त करते हुए उनके योगदान को उल्लेखनीय बताया. वरिष्ठ आलोचक विष्णुदेव तिवारी ने अपने वक्तव्य में कहा कि संवाद कभी व्यर्थ नहीं जाते. 'सँझवत' संवाद की वही धारा है, जो भोजपुरी साहित्य को ऊर्जा और दिशा प्रदान करेगी. उन्होंने सुझाव दिया कि हर अंक में बक्सर के किसी साहित्यकार पर आलोचनात्मक लेख अवश्य प्रकाशित किया जाए, जिससे नई पीढ़ी को भी मार्गदर्शन मिले. उपस्थित लोगों ने उनके इस प्रस्ताव की सराहना की. विशिष्ट अतिथि भगवान पांडेय ने पत्रिका के सामग्री चयन, संयोजन और विमर्श को अत्यंत समृद्ध बताते हुए कहा कि यह अंक शोधार्थियों के लिए संदर्भ ग्रंथ की तरह कार्य करेगा. उन्होंने इसे संग्रहणीय साहित्यिक दस्तावेज की संज्ञा दी. समारोह की अध्यक्षता कर रहे डॉ. रामेश्वर प्रसाद वर्मा ने कहा कि डॉ. रामरक्षा मिश्र विमल की संपादन शैली में गंभीरता, संवेदना और सामाजिक उत्तरदायित्व की झलक है. 'सँझवत' न केवल आलोचना की दृष्टि से सशक्त है, बल्कि यह भोजपुरी भाषा के बौद्धिक विकास की दिशा में भी एक मजबूत कदम है.

कार्यक्रम के अंत में संपादक डॉ. रामरक्षा मिश्र विमल ने 'सँझवत' के नियमित प्रकाशन की प्रतिबद्धता दुहराई और बक्सर की साहित्यिक आत्मीयता के लिए आभार प्रकट किया. उन्होंने कहा कि साहित्य का यह प्रयास किसी एक व्यक्ति का नहीं, बल्कि एक समर्पित समुदाय की अभिव्यक्ति है. इस अवसर पर शिव बहादुर पाण्डेय 'प्रीतम', शशि भूषण मिश्र, रामेश्वर नाथ मिश्र 'विहान', अतुल मोहन प्रसाद, उमेश पाठक 'रवि', कुशध्वज सिंह 'मुन्ना', नागेन्द्र उपाध्याय, भगवान पांडेय, विष्णुदेव तिवारी, डॉ. अरुण मोहन 'भारवि' सहित कई साहित्यप्रेमी उपस्थित रहे. 'सँझवत' का यह अंक भोजपुरी साहित्य को आलोचना की परंपरा में एक नई ऊँचाई तक ले जाने की क्षमता रखता है. यह प्रयास आनेवाले समय में भोजपुरी भाषा को विचार और विमर्श के केंद्र में लाने में सहायक सिद्ध होगा.



संज्ञवत

भोजपुरी साहित्यिकी

अंक 9

अक्तूबर, 2025

संपादक

डॉ. रामरक्षा मिश्र विमल

सह संपादक

सीमा मिश्र

मीडिया : अँजोरिया

ओ पी सिंह

चित्र/पेंटिंग

पंकज तिवारी

आवरण चित्र : मेटा एआई

संपर्क

देवनगर, निकट- पिपरा प्राइमरी
गवर्नमेंट स्कूल, पोल नं. 28
पो.- मनोहरपुर कछुआरा,
पटना-800030
मो. 9831649817
ई मेल :
sampadaksanjhvat@gmail.com

मूल्य : 60 रुपया

प्रकाशित रचनन का विचारन से पत्रिका-
परिवार के सहमति जरूरी नइखे। अपना
रचना खातिर लेखक खुदे जिम्मेदार
होइहें। विवाद का स्थिति में न्यायक्षेत्र
पटना होई।

स्वत्वाधिकारी रामरक्षा मिश्र विमल द्वारा
संपादित, अक्षर संयोजन अउर प्रकाशित।
अव्यावसायिक प्रकाशन।

अनुक्रम

संपादकीय

भोजपुरी साहित्य का श्रीवृद्धि के शुभकामना 2-3

लेख

आर/आरी/अरार/डँडार- डॉ. नंदकिशोर तिवारी 4

आखर बिन धरती के... - डॉ. रामरक्षा मिश्र विमल 11

डॉ कमलेश राय के एगो गजल - विष्णुदेव तिवारी 17

संस्मरण

पचरुखी के चीनी मिल- डॉ. रंजन विकास 6

कहानी/लघुकथा

आँखि रहत- डॉ. शारदा पाण्डेय 31

समस्या समानांतर के- विद्या शंकर विद्यार्थी 40

रिश्ता- मनोकामना सिंह 'अजय' 41

समीक्षा

किसिम-किसिम के फूल : एगो नया काव्य-दृष्टि 47

बात प बात बतकूचन- समाज आ इतिहास के... 50

समाज आ इतिहास के समेटत एगो आत्म-संस्मरण 54

भोजपुरी के पहिल डायरी 'नीक-जबून' 59

एकांकी

घुरवा के माई- बरिंद्र पाण्डेय 42

कविता

रामेश्वर प्रसाद सिन्हा 'पीयूष'- 23

डॉ. रामनाथ पाठक 'प्रणयी'- 24

भगवती प्रसाद द्विवेदी- 25

श्रीभगवान पाण्डेय- 26

सौरभ पाण्डेय- 27 मनोज भावुक- 28

डॉ. राजू प्रसाद /अयोध्याप्रसाद उपाध्याय- 29

उमेश कुमार पाठक 'रवि'- 30

गीता चौबे 'गूँज'- 10 राम अचल पटेल- 40

अर्जुन सिंह 'अशांत'- 56

गंगा प्रसाद अरुण- 57

डॉ. अनिल कुमार दूबे 'अंशु'/कुँवर नाजुक- 58

स्तंभ

सोस्ती सिरी पत्री लिखी... 66

धरोहर- भारतेंदु हरिश्चंद्र के भोजपुरी कविता 72

किताबि : एक नजर में-

भोजपुरी साहित्य : समय के साखी- 63

एगो किताब मतारी-बाप खातिर/निर्भीक सन्देश- 65



भोजपुरी साहित्य का श्रीवृद्धि के शुभकामना

वर्तमान बरिस 2025 अपना उमिरि का ढलान पर बा। एह साल कविता, कहानी, निबंध, संस्मरण आदि के भोजपुरी के अनेक किताब अइली सन। एकरा अलावे जहाँ समीक्षा विधा के कुछ संग्रहन से भोजपुरी आलोचना के मार्ग प्रशस्त भइल, ओहिजे पहिले के भोजपुरी सम्मेलन पत्रिका का 'आलोचना विमर्श' अंक (संपादक : भगवती प्रसाद द्विवेदी) का शृंखला के आगे बढ़ावत 'सँझवत' के आलोचना विशेषांक भी प्रकाशित भइल। एकरा अलावे एह बरिस लोक रचना का अनेक संकलन से भी भोजपुरी वाङ्मय के भंडार समृद्ध भइल। अबकी बरिस नया पत्रिका का रूप में राजेंद्र भारती जी का संपादन में एगो ऑनलाइन पत्रिका 'दीया बाती' के सौगात मिलल।

एह बरिस चार गो बहुत महत्वपूर्ण किताब प्रकाश में अइली सन- डॉ. नर्वदेश्वर राय रचित 'भोजपुरी नाट्यशास्त्र', डॉ. ब्रजभूषण मिश्र रचित 'भोजपुरी कविता के इतिहास', अरुणेश नीरन जी का संपादन में 'प्रतिनिधि कविता : भोजपुरी' अउर डॉ. ब्रजभूषण मिश्र संपादित 'भोजपुरी प्रतिभाएँ'।

डॉ. नर्वदेश्वर राय द्वारा लिखित 'भोजपुरी नाट्यशास्त्र' मनीष प्रकाशन, वाराणसी से प्रकाशित भइल बाटे। एकर पहिल संस्करण 2024 में निकलल बा बाकिर 2025 में ई लोकार्पित भइल। एकर कुल पृष्ठ संख्या 272 आ मूल्य ₹1150 बाटे।

डॉ. नर्वदेश्वर राय से पहिले भोजपुरी में केहूँ नाट्यशास्त्र ना लिखले रहल हा। डॉ. नर्वदेश्वर राय द्वारा लिखित 'भोजपुरी नाट्यशास्त्र' भोजपुरी के पहिल नाट्यशास्त्र हटे। एहसे संबंधित महत्वपूर्ण तथ्य ईहो बा कि एकरा से पहिले नाटक का सिद्धांतन पर अतना गंभीरता से विचार ना कइल गइल रहे। एह दृष्टि से एह ग्रंथ के ऐतिहासिक आ साहित्यिक दूनो महत्व बाटे। लेखक के कहनाम बा कि देश-विदेश का प्रमुख नाट्यशास्त्रन आ भोजपुरी नाटकन के अध्ययन कइला का बादे एकर लेखन भइल बा। एहमें नाटक का परिभाषा से रंगमंच तक कुछछ छोड़ल नइखे गइल। एह तरह से ई अपने आप में पूरा बा आ भोजपुरी नाट्यशास्त्र के मानक ग्रंथ मानल जा सकऽता।

कुल 272 पृष्ठ में प्रकाशित एह ग्रंथ का सामग्री के नाट्यशास्त्र के परम्परा, नाटक के परिभाषा, नाटक के तत्व, वस्तु-विन्यास, पात्र-योजना,

संवाद-योजना, नाट्यरस, रंगनिर्देश, नाट्यरुद्धि, नाटक के प्रकार, रंगमंच- कुल एगारह भाग में विभाजित कइल गइल बा। निस्संदेह 'भोजपुरी नाट्यसास्त्र' चिर काल तक भोजपुरी के संदर्भ ग्रंथ का रूप में प्रतिष्ठित रहेवाला ग्रंथ बाटे।

डॉ. ब्रजभूषण मिश्र द्वारा लिखित 'भोजपुरी कविता के इतिहास' अब तक का सहित्येतिहास के एगो मानक ग्रंथ कहल जा सकत बा। 468 पृष्ठ वाला एह ग्रंथ के प्रकाशन भलहीं 2024 में मैथिली-भोजपुरी अकादमी, दिल्ली से भइल बा, बाकिर ई लोकार्पित भइल बाटे 2025 में। एकर मूल्य ₹500 राखल गइल बा। एहमें कवनो संदेह नइखे कि 'भोजपुरी कविता के इतिहास' शोधपूर्ण बाटे। एहमें लेखक के पर्याप्त अध्ययन आ श्रम लउकता। एहिजा डॉ. अरुण कुमार झा जी के कहनाम तथ्यपूर्ण आ सार्थक लागता- “हमरा समझ से भोजपुरी साहित्य के जे इतिहास अब तक लिखाइल बा, ओह सब के ग्रहण करे योग्य सामग्रियन के समेटत आ ओह सब के त्रुटियन के छोड़त एह इतिहास के अद्यतन करे के सफल कोशिश मिश्र जी कइले बानी।”

‘प्रतिनिधि कविता : भोजपुरी’ काव्य संकलन अरुणेश नीरन जी का संपादन आ प्रकाश उदय अउर बलभद्र जी का सह संपादन में सर्वभाषा ट्रस्ट, नई दिल्ली से प्रकाशित भइल बाटे। 288 पृष्ठ का एह काव्य संकलन के प्रथम संस्करण 2025 में प्रकाशित भइल बा आ एकर मूल्य ₹349 राखल गइल बा।

एह पुस्तक का कवियन के ‘झीनी-झीनी बीनी चदरिया’, ‘सुराज धुन बोलऽ’, ‘पाँव बढ़ल राह बनल’, ‘कारवाँ’ आ ‘विशेष’ भाग में बाँटल गइल बा।

बलभद्र जी के ई कहनाम सही लागता कि “भोजपुरी में ना अतने कवि बाड़न आ ना अतने कविता। अध्ययन आ चयन के एगो आपन सीमा होला। बेशक, ई संग्रह ओह से बहरी नइखे। तब्बो, भरोसा बा कि एह संग्रह के लोग जरूर पसन करी।”

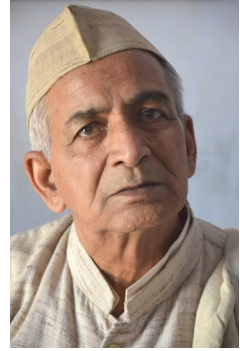
‘भोजपुरी प्रतिभाएँ’ किताब डॉ. ब्रज भूषण मिश्र का संपादन में भोजपुरी साहित्य अकादमी, मध्यप्रदेश संस्कृति परिषद् से प्रकाशित भइल बिया। एहमें भोजपुरी भाषा-साहित्य, कला-संस्कृति-समाज-राजनीति के 130 दिवंगत पुरोधा पर अलग-अलग लेखक लोगन के हिंदी निबंध संकलित बाटे। 583 पृष्ठ का एह ग्रंथ के प्रथम संस्करण 2025 में प्रकाश में आइल बा। संपादक डॉ. ब्रज भूषण मिश्र एह ग्रंथ के भोजपुरी-भाषा-साहित्य, कला-संस्कृति अउर समाज के सभ दिवंगत पुरोधा प्रतिभा का स्मृति-तर्पण के ग्रंथ मानतानी। निस्संदेह ई पुस्तक भोजपुरी का महान व्यक्तित्वन के परिचय कोश का रूप में प्रतिष्ठित होई।

भोजपुरी साहित्य के अइसहीं श्रीवृद्धि होत रहो, ईहे शुभकामना बा।

रामरक्षा मिश्र विमल

आर/आरी/अरार/डँडार

डॉ. नंदकिशोर तिवारी



खेती में 'आर' चाहे 'डँडार' सीमा के, मरजादा के बतावे खातिर प्रयुक्त होला। गंगिआ के किनारा पर हर बरिस एही “आर” खातिर झगरा होला, गोआम जुटेला। गंगा माई के समने भला के खाड़ा होई आ उनुका पेटा के भुँइ के आपन के कहीं। सभकरा सीमा के गररिके आपन बेटन के खूब अन उपराजे खातिर उरबर माटी देके ऊ हर साले लवट जाली। इहे 'आर' के ओहिजा से हटके आपन जमीन कहावे खातिर दीहल जरूरी हो जाला। कहाई-हमरा आरी पर मत अइहऽ। आरी के घास आधा आधी। एने हूँ गढ़ऽ ओने हम गढ़ब। आरी में पानी निकलला के भुरूका भइल कहल जाला। हर आरी में एगो मुहीं होला। ऊ पानी जाए आउर निकाले के मोहाना ह 'आर' के मैड भी कहल जाला। जवन मोटा आर होला ऊ डंडार कहाला ओह पर पवधा भी रोपा जाला 'आर' पानी के रोके खातिर आपन जमीन के हिस्सा से भी जादा जरूरी चीझ ह। आर आ आरी दूनो एके चीड़ा ह आरी भी एक से दू करे वाला सस्तर ह आ आर भी एक भाई के खेत के दू टुकड़ा में करेला। आरी के संसकिरित में ज्ञानवती कहल जाला। ग्यानी अदिमी अपना ग्यान से सभ तरह के भरम के काट देलन आरी निअन। ई पुरान सब्द ह-ऋग्वेद में कहल बा - विश उपद्रवते दस्यमारी (ऋ. 1-13.77) भोजपुरी के आर, हँडार, सीमे खातिर ह। लइका प एगो बूढ़ मजाक में बुझउवल सुनावस - चारों ओरी आर बा, बिचवा दरार बा, तनिकी सा लाल बा। बहुत दिन के बाद बतवलन कि ऊ बबुआ अइसन चीझ ह कि ओकरा खातिर सभके लार गिरे लागेला। तब बुझाइल कि सरिरे के एगो मरम भाग के बरनन करे में ई भरमा देलन हमरा के।

अब ओह 'आर' से 'आरी' बन गइल। आरी पर साँप बा, ओही में ओहनी के अड़ान रहेला। आरी से बड़ होला डँडार। चक के सीमा एही से घेराला। ऊ आरी से बड़ चवड़ा आ मोटा होई डंडा नीअन आर अरार में भी

अधिका अंतर नइखे। गंगाजी के अरारे हमार गाँव बा। ई 'गंगायां घोषः' लेखा प्रयोग बा। अरार गिरत बा, भीसन बाढ़ आइल बा। घर के ओरी भी ऊहे ह। एगो ओर (किनारा) खटिया के ओर छेड़ाइल बा- माने एक ओरे बीनेके काम सुरू भइल बा ओरे-छोर से छवर बनल बा- किरन जी के प्रयोग देखीं- 'हमार खेत ह, छवर ना ह। तोहरा बाप के दवर ना ह'। चीन के चढ़ाई कइला पर ऊहाँ के प्रतिक्रिया रहे। एहसे आर-डँडार-ऋ-घ.ञ् = आर से बनल। एही से एगो सब्द बनल आरित = आर + क्त। जे आर नीअन मरजादित होखे। गोसाईं जी अरबी भासा के 'आरि' के अरथ में प्रयोगे कइलीं - "कबहूँ ससि माँगत आरि करै" 'हठ' के अरथ में ई बा। आर के अरथ होला - नफरत, लाजा, बैर, अदावत। संसकिरित अरि के माने दुसुमन होला अरि भी लड़े में आपन सीमा तक लड़ेला, सकती भर उठा ना राखे आ भेद करेला। चाना के मामा बनाके ना जाने कबसे लइकन के माई, चाना में अपना भाई के रोज दरसन करत आवत बाड़ी। मामा के भगिना उनुका के देखे खातिर चकोर जइसे हो गइल बा। ओकरा ईछा के कविता के नाद आछा तरह से गुनगुना देता - 'चाना मामा आरे आवऽ पारे आवऽ, नदी के किनारे आवऽ, सोने के कटोरा में दूध भात ले-ले आवऽ बचवा (बाबू) के मुँहवा में घुटुक। एकर कतना बड़ा मरम बा। सोना के कटोरा, ममे दे सकेला अपना भगिना (बरहमन) के। दूध-भात खाइल, ऊहो सोना के कटोरा में सभसे बड़ सौभाग के निसानी ह। सभ असिरबाद माँगे त अइसन एगो कहनी ह कि एगो बूढ़ मेहरारू भगवान से बर माँगलस। एके वाक में मरँगे के रहे। कहलस कि हमार नाती पोता सोना-चानी के थरिया में जिनिगी भर दूध-भात खास। अइसने चाना मामा से नेह जोड़ल बा। चाना मामा के कमी का हो सकेला। समुदर से जनमलन, लछिमी के साथे, रामजी के नाँव में टँका गइल इनिकर नाँव रामचन्द्र। हर लइका के मामा बनि गइलन बाड़न आकास में अब आवस ओकरा पास ना आ सकस त नदिए के किनारे आ जा पानी में त उनकर चेहरा देखार होइए जाई। उनुका सुनरता के दरसन त होइए जाई।

(बरिस-11 अंक-2 सुरसती अप्रैल-जून-2010 से साभार)

संपर्क :

निराला साहित्य मंदिर, बिजली शहीद,

सहसराम- 821115

जिला- रोहतास (बिहार)

पचरुखी के चीनी मिल

डॉ. रंजन विकास



1921 में बिहार प्रांत के तिसरका चीनी मिल 'बिहार सुगर वर्क्स, पचरुखी' नाँव से खुलल रहे। बाद में आउरो कई गो चीनी मिल खुलल। चीनी उद्योग के एगो नया क़ानून 'बिहार चीनी कारखाना नियंत्रण अधिनियम' 1937 में बनल। पचरुखी के चीनी मिल में दूगो यूनिट रहे - बिहार शुगर वर्क्स यूनिट आ बिहार डिस्टिलरी यूनिट। एह मिल के मालिक रहले मशहूर वैज्ञानिक डॉ. विक्रम साराभाई। ऊ बाद में निजी कारण से एह मिल के बी.पी. अग्रवाल के हाथे बेच देहले।

पचरुखी में चीनी मिल खुलल त तनी रोजी-रोजगार के साधन बढ़ल। पचरुखी बाजार के सामाजिक-आर्थिक विकासो भइल। पचरुखी के अलावे मखनूपुर, पुखरेड़ा, सादिकपुर, इलामदीपुर, चमुखा, तरवारा, बड़हरिया, जसौली, सुपौली, चाँप, गहिरवाबारी, नारायणपुर, मलूपुर, बिन्दवल, फलपुरा, चैनपुर, सहली, बड़रम, हसनपुरवा, गोपालपुर, सरौती, गम्हरिया, दरौंदा, बगौरा, महाराजगंज, बसन्तपुर, आन्दर, असांव, फरीदपुर, हुसैनगंज, रघुनाथपुर आ आउरो गाँवन में ऊँख के खेती गज़ब के होत रहे। ओह घरी जवार में लगभग पनरह से बीस हजार हेक्टेयर ऊँख के खेती होत रहे। पूरा ऊँख के खपत पचरुखी चीनी मिल में होत रहे, जवना से गन्ना किसान के नगदी आमदनी बढ़िया रहे। किसान आ कारोबारियन में खुशहाली रहे।

सीजन में ऊँख से भरल बैलगाड़ी, टायरगाड़ी, ट्रैक्टर के टेलर आ ट्रक के लरी लागल रहत रहे। अकसरे बाजार में जाम लाग जात रहे। ऊँख तउलावे खातिर अपना बारी के इन्तजारी में गाड़ीवान के एक-दू रात ले पचरुखी बाज़ार में गुजारे के पड़त रहे। अइसन लागत रहे जे ऊँख के मेला लागल होखे। गाड़ीवान सब अपना गाड़ी के नीचे लिट्टी सेंके के जोगाड़ बइठा लेत रहले सन। कुछ त घर से ले आइल चिउरा आ मीठा से काम चलाव सन। रात के खाना खइला के बाद कुछ गाड़ीवान अपना गाड़ी के नीचे त कुछ मंदिर के चबूतरा पर त कुछ बाजार में सुबहिता के हिसाब से जगह ध लेत रहले सन। सबेर फ्रेश होके अपना गाड़ी के लगे चहुँप जात रहले सन।

बाजार के लइका सब बैलगाड़ी, ट्रैक्टर आ ट्रक के पीछे धउर के ऊँख घींचत रहले सन। गाड़ीवान जब लइकन के ऊँख घींचत देख लेव त भरपेटाहे

गरिआवे। कबो-कबो बीच राहे गाड़ी रोक के ओकनी के धउरइबो करे। लइका अस लुती नियर भाग सन जे गाड़ीवान के पकड़ में आवते ना रहले सन। ई नज़ारा रोजे के रहे। रेल लाइन के राहे ऊँख से भरल क्रेन आवे त वजन करावे के इंतज़ारी में कई दिन ले सिसवानी के लगे सन्टिंग में पड़ल रहत रहे। कबो-कबो कुछ लइका चलत गाड़ी पर चढ़ के ऊँख नीचे गिराव सन। नीचे वाला लइका धउर के ऊँख बटोरत जइहे सन। अइसन ऊँख चाभला के मज़ा अलगे रहे।

गन्ना विकास आ गन्ना मार्केटिंग यूनियन ओही जगह रहे, जहँवा चीनी मिल रहे। पचरुखी चीनी मिल के गन्ना विकास आ गन्ना मार्केटिंग यूनियन आफिस पचरुखी बाज़ार में रहे। ओकरा अंदर दू से तीन गाँव पर एगो ईख उत्पादक समिति बनल रहे। गन्ना विकास आ गन्ना मार्केटिंग यूनियन के अंदर बीस से पच्चीस गो ईख उत्पादक समिति बनल रहे। एह समिति के सदस्य ओह क्षेत्र के गन्ना किसान रहे। ईख उत्पादक समिति के सचिव आ अध्यक्ष पद के चुनाव ओह क्षेत्र के गन्ना किसान लोग करत रहे। ईख उत्पादक समिति के सचिव आ अध्यक्ष लोग मिल के गन्ना विकास आ गन्ना मार्केटिंग यूनियन के सचिव आ अध्यक्ष चुनत रहे।

पचरुखी के चीनी मिल गन्ना विकास आ गन्ना मार्केटिंग यूनियन आफिस में थोक भाव से पुर्जी भेजत रहे। एह पुर्जी पर अध्यक्ष आ सचिव के हस्ताक्षर आ मोहर लाग जाव त ओकरा के ईख उत्पादक समितियन के आफिस में भेज देहल जात रहे। फेर ओह पुर्जी पर ईख उत्पादक समिति के अध्यक्ष आ सचिव के हस्ताक्षर आ मोहर के बाद गन्ना किसान का बीच बाँट देहल जात रहे। एह पुर्जी के बिना गन्ना कवनो किसान गन्ना के ना त चीनी मिल में ले जा सकत रहे आ ना ओजा बेच सकत रहे। एक तरे से पुर्जी गेट-पास रहे। एह पुर्जी के रहले पर ऊँख से भरल बैलगाड़ी, टायर गाड़ी, ट्रैक्टर, ट्रक भा क्रेन के चीनी मिल के अंदर जा सकत रहे। काँटा पर ऊँख तउलइला पर एगो रसीद मिले, जवना के भुगतान गन्ना विकास आ गन्ना मार्केटिंग यूनियन आफिस करत रहे। गन्ना विकास आ गन्ना मार्केटिंग यूनियन आफिस के खरचा, गन्ना किसान के भुगतान के मोसलम राशि आ पुर्जी माने गेट-पास पचरुखी चीनी मिल मुहैया करावत रहे। बाद में गन्ना किसान लोग आपन गन्ना के पइसा पचरुखी चीनी मिल से लेवे लागल।

चीनी मिल में अतना ऊँख जमा हो जाव, जवना से बरीस में नव महीना ले चीनी के उत्पादन होत रहे। डिस्टिलरी यूनिट सालो भर चले। मिल में नियमित आ सीजनल कर्मचारी दुनू रहे। जादेतर नियमित कर्मचारी आ

पदाधिकारी सुख-सुबहिता वाला बेवस्थित कॉलोनी में रहत रहे। ओजा चौबीसो घण्टा बिजली आ पानी के सुबहित बेवस्था रहे। मिल कालोनी के चहल-पहल से ओजा हरमेसा रौनक रहत रहे। क्लब कैम्पस में अकसरे सांस्कृतिक आयोजन होत रहे।

पचरुखी बाज़ार में अइसन सुख-सुबहिता के कवनो बेवस्था ना रहे। सीजनल कर्मचारी अगली-बगली जवार के रहे। ड्यूटी खतम होते ऊ लोग पचरुखी बाजार से कुछ जरूरी सामान के कीनल-बेसहल करत करे। ओकरा बाद अपना घरे लवट जात रहे। मिल कॉलोनी के कुछ लोग पचरुखी बाजार में रोजे टहले आवे। आवते ओह लोग के चाय के दोकान पर बइठकी होखे। फेर बाजार से साग-भाजी आ आउरो जरूरी सामान लेके लवट जात रहे। एह लोग के अइला से बाजार में चहल-पहल बढ़ जात रहे। ई रोजे के एगो सिलसिला रहे। चालीस के दशक में स्वतंत्रता आन्दोलन के सेनानी सैयद महमूद के साढ़ू सैयद रकीब एह चीनी मिल के मैनेजर रहले। ओह घरी राहुल सांकृत्यायन, मौलाना मजहरुल हक के बेटा हुसेन मज़हर आ सैयद महमूद के बेटा सैयद हबीब किसान आन्दोलन के नेता रहे। गन्ना किसान आन्दोलन में एह तीनों आदमी के भरपूर समर्थन मिलल रहे। ई लोग अतना प्रभावशाली परिवार से रहे जे पुलिसो एह लोग पर हाली हाथ ना डालत रहे। राहुल सांकृत्यायन के नेतृत्व में हुसेन मज़हर आ सैयद हबीब गन्ना किसान के माँग बदे अकसरे पचरुखी चीनी मिल पर पिकेटिंग करे। एह पिकेटिंग में राहुल सांकृत्यायन दू-तीन बेर शामिल भइल रहले।

अपना ज़माना में पचरुखी मिल के चीनी पूरा हिन्दुस्तान में नामी रहे। 1974 के आसपास ऊँख माफिया लोग सोचल-समझल साजिश के तहत चीनी मिल के सरकारीकरण के अफवाह उड़ा देहल। एह खबर से मिल मालिक के उदासीनता बढ़त गइल। ओपर से ट्रेड यूनियन के हड़ताल अलगे रहे। चीनी के उत्पादन कम होत गइल। नतीजा ई भइल जे ओही बरिस पचरुखी के चीनी मिल बंद हो गइल। फेर ओकरा बाद कबो चालू ना हो सकल। समय के मार खाली आदमिये पर ना पड़ल, ओकर असर घर-परिवार आ समाज के आर्थिक विकासो पर पड़ल। एह उठा-पटक में पचरुखी बाजार आ जवार के आर्थिक विकास बहुते पीछे छूटत चल गइल।

मिल बन्द भइला से समाज के तीन गो वर्ग के आर्थिक स्थिति पर बहुते खराब असर पड़ल। पहिला, हजारन के संख्या में पदाधिकारी आ कर्मचारी बेरोजगार हो गइल। रोजी-रोटी खातिर ऊ लोग हेने-होने भटके पर मजबूर हो गइल। बरिसन ले कुछ लोग एह आसरा में रहे जे चीनी मिल चालू होई। एही

फेरा में ओह लोग के जमा पूँजी ले ओरा गइल।

लइकन के पढ़ाई-लिखाई मोसकिल होखे लागल। रासन-पानी के लाला पड़े लागल। हारपाछ के जे बाहर के लोग आपन प्रदेश के राह ध लेहल। सीजनल कर्मचारी के हालत जादे खराब रहे। आमदनी के दोसर कवनो जरियो ना रहे। थोरथार खेती-बारी रहे, जवना से कसहूँ जिनिगी बसर करे पर मजबूर रहे। बहुते लोग के पलायन करे के पड़ल।

दोसर वर्ग रहे गन्ना किसान। ओह लोग के घर-खरची ऊँख के खेती से होखे वाला नगदी आमदनी से चलत रहे। मिल बंद भइला से ओह लोग के आर्थिक समस्या विकराल हो गइल। रोजी-रोटी खातिर जादेतर गन्ना किसान के गाँव-जवार से पलायन करे के पड़ल। जे गाँवे रह गइल, ओह लोग के मजबूरी में ऊँख के खेती साफे छोड़ देवे के पड़ल। फेर दोसर फसल के खेती करे लागल। ऊँख के खेती नाँवे भर के रह गइल। किसान लोग आपन जरूरत भर गुड़ बनावे। थोर गुड़ के खपत पचरुखी बाजार में हो जात रहे। एह से जवन आमदनी होखे, ऊँट के मुँह में जीरा के फोरन जस रहे।

तीसर वर्ग पचरुखी बाजार के बेपारी रहे। मिल बंद भइला से पचरुखी बाजार के रौनक उजड़ गइल। ओजा के अर्थ बेवस्था साफे थउस गइल। बेपारी के बेवसाय पूरा तरे से मार खा गइल। बिक्री-बट्टा बंद भइला से बेपारी लोग के घर-खरची चलल मोहाल हो गइल। गँवे-गँवे चीनी मिल के पार्ट-पुरजा आ अवजार चोरी होखे लागल। हालत अइसन हो गइल जे चीनी मिल के खाली बाहरी ढाँचा बाँच गइल।

1921 के बनल पचरुखी के चीनी मिल 1974 में बंद हो गइल। आज ओजा वीरानगी पसरल बा। बदलत समय के साथे सरकार बदलत गइल। हर चुनावी मौसम में नेतवन के आवाजाही बढ़ जाव। मिल के चालू करावे के भरोसा, वादा आ आश्वासन के लरी लाग जात रहे। अइसन लागे जे एह लोग के जीतला पर चीनी मिल चालू होइए जाई। चुनाव बाद भरोसा, वादा आ आश्वासन हवा हवाई हो जाव। लोग अपना के ठगल महसूस करे।

पचरुखी के चीनी मिल बंद होखे से पहिले वीरेन्द्र पाण्डेय एह शर्त पर मिल के लीज पर लेहले जे मिल के चालू हालत में उनकर मिल्कियत बनल रही आ मिल बंद भइला पर किसान के जमीन लवटा देहल जाई। मिल बन्द होखे ले सेंट्रल बैंक छपरा आ सीवान के अस्सी लाख रुपया कर्जा हो गइल। बैंक हाईकोर्ट में केस कइलस त मिल मालिक स्टे आर्डर खातिर सुप्रीम कोर्ट में चुनौती देहले। कोर्ट के फैसला बैंक के पक्ष में आइल। बैंक जमीन बेचल शुरु कइलस। एह पर किसान लोग बिखिया गइल। दोसरा ओर हजार से जादे मजदूरन के भुगतान

बाकी रहे। ऊहो लोग खिसियाइल रहे। किसान के साथे ऊहो लोग जमीन बिक्री के विरोध करत रहे। पचरुखी प्रखण्ड के चाँप के रहनिहार विजय शंकर पाठक मिल के रखवाली में सैतीस बरीस ले ड्यूटी निभवले। 2015 में मरियो गइले, बाकिर अबहीं ले उनकर सेवा काल के बकाया राशि ना मिलल। कोर्ट के आदेश पर पचरुखी चीनी मिल के जमीन नीलाम हो गइल, बाकिर जमीन के म्युटेशन ना हो सकल। नीलामी पर खूबे राजनीति भइल। धरना, प्रदर्शन आ विरोध भइल, बाकिर ऊ विरोध कमजोर होत चल गइल।

संपर्क :

204, विश्व शाकुन्तल अपार्टमेंट, मंदिर मार्ग (रोड नं. 2), शिवपुरी पश्चिमी, पटना -800023
मो. - 9939592241 dr.ranjanvikas@gmail.com

सरस्ती छंद

चलीं जा प्रेम बाँटे गीता चौबे 'गूँज'



सुंदर मंद समीर बहेला,
मन के लागे नीक।
बड़ा मगन तरुवर झूमेला,
बन में गावे पीक।।
समाचार धरती के पूछे,
दउड़ल आवे मेह।
उमड़-धुमड़ धानी अँचरा पे,
बरसा दिहले नेह।।

जेठ के जरल धरती रानी,
भइली बड़ी विभोर।
प्रणय-निवेदन मेघा के सुन,
ढरल खुशी के लोर।।
सूख रहल धरती हरसइली,
गइली बड़ी अघाय।
मन में लड्डू फूटे लागल,
गइली तनिक लजाय।।

चारे दिन के ई चंदनिया,
फिर त उहे अन्हार।

रंग बदलते मौसम संगे,
चलि जाई बहार।।
आइल-गइल त होत रहेला,
बतिया हउवे साँच।
जे एकरा के गुनल मन में,
ओपे कइसन आँच।।

जलन-कुढ़न सब मन से तेजीं,
नश्वर बा संसार।
चलीं प्रेम संदेशा बाँटीं,
जिनगी के दिन चार।
इहे कमाई कइला पर ही,
खुश होले भगवान।
अतमो आपन खुश हो जाली,
निकलेली जब जान।।

choubey.geeta@gmail.com

आखर बिन धरती के दुख दूना

डॉ. रामरक्षा मिश्र विमल



छंद मर्मज्ञ आशु कवि बच्चू पांडेय जी अपना समय के प्रतिष्ठित आ बहुचर्चित कवि रहीं। पांडेय कपिल जी उहाँके सारन जिला का साहित्यिक सक्रियता के मेंह मानत रहीं। उहाँका कविता का सडहीं गद्यो खूब लिखलीं। भलहीं उहाँका जयप्रकाश महिला महाविद्यालय, छपरा में राजनीतिशास्त्र के व्याख्याता रहीं बाकिर उहाँका धमनी में साहित्य के सुरसरिता बहत रहे। डॉ० प्रभुनाथ सिंह महाविद्यालय, छपरा में प्राचार्य भइला का बादो उहाँका भीतर के कवि ओइसहीं सहज आ सुरक्षित रहे। अध्यापन का अलावे राजनीति का क्षेत्र में भी उहाँ के दमदार पैठ रहे। उहाँका दस बरिस तक छपरा नगरपालिका के वार्ड कमिश्नर रहीं। हिंदी आ भोजपुरी का प्रति उहाँका प्रेम के एही बात से सहजे समझल जा सकत बा कि जहाँ उहाँका सारण जिला हिन्दी साहित्य सम्मेलन के सदस्य रहीं, ओहिजे सारण जिला भोजपुरी साहित्य सम्मेलन के अध्यक्षो रहीं। भोजपुरी साहित्य में उहाँका सक्रियता के एही से अंदाजा लगावल जा सकता कि उहाँका छपरा से निकलेवाली पहिल भोजपुरी पत्रिका 'माटी के बोली' के संपादक रहीं।



भोजपुरी काव्य में पांडेय जी के लेखनी कविता, गीत, गजल- हर फार्मेट में चललि बिया। उहाँका कविता में उहाँ के जीवन-दर्शन का सडहीं जीवन के भिन्न-भिन्न कटु-मधुर अनुभव साफ-साफ लउकत बा। बच्चू पांडेय जी के भोजपुरी कविता-संग्रह 'नभ में उड़ल कपोत' में उहाँका दिल आ दिमाग के समग्रता में देखल जा सकता। ओइसे त जीवन आ जगत का हर पहलू पर प्रत्यक्ष भा परोक्ष रूप में उहाँ के कलम अपना ज्ञान आ अनुभव के जादू चलावे में कवनो कोर-कसर नइखे छोड़ले, बाकिर साँच पूछीं त हर कदम पर उहाँ का शिक्षक आ जिंदादिल व्यक्तित्व के दर्शन होता।

बचपन का सुरक्षा के चिंता पांडेय जी का कविता में खूब प्रदर्शित भइल

बा। कवि लइकन का स्वतंत्रता पर लगाम लगावे के पक्ष में नइखे। ऊ चाहत बा कि लइकन का कोमल अउर मधुर सपनन के दुलारल आ सहलावल जाउ।

रोकीं मत बढ़वार उमिर के बचपन के उछले दीं
सपना से भींजल, उमंग के धारा के मचले दीं
चिरई जइसन, नाप रहल बा ई फइलाव गगन के
दुलराई, सहलाई, एकरा कोमल, मधुर सपन के

कवि चाहत बा कि हर अभिभावक एह बात के समझो कि लइकन के बचपन कोर कागज नियन हटे, ओह पर लिखेवाला काम जइसे-तइसे ना होखे के चाहीं, ओकरा खातिर प्रेम आ विवेक का सडे सजगता भी बहुत जरूरी बा। कवि अभी तक मोह आ अशिक्षा में अन्हुआइल लोगन के जगावे का कोशिश में बाटे-

आई हमनी मिलजुल के कुछ गद्दीं सुरक्षा घेरा
बचपन के व्यक्तित्व निखारीं जागे के ई बेरा।

लइकन का बचपन के लेके कवि बहुत सचेत बा। ऊ बार-बार आपन चिंता प्रकट करता।

ई विकास के दर्पण एह पर धूल, धुआँ मत डालीं
एकरा ओठन पर लाली पसरे दीं, जतना पसरे
टोकीं मत, एकरा विकास के दीं समुचित संरक्षण

शोषण, अत्याचार, भूख से बचपन आज बचाई
पढ़े-लिखे का बेरा में मत दोसर काम कराई।

राजनीति का बारे में कवि के विचार पूरी तरह स्पष्ट बा, काहेंसे कि ओकर नीमन अनुभव कवि के रहल बा। ऊ मानता कि एहिजा जे पहुँची, ओकरा रावन बनहीं के बा। ऊ पहिलहीं सचेत कइ रहल बा-

छद्म से सींचल सियासत के डगर

जे इहाँ पहुँचल, उहे रावन भइल

जवना प्रजातंत्र के दुहाई देत राजनीति का धुरंधर लोगन के जीभ ना थाके, कवि निर्द्वंद्व भाव से ओकरा छद्म रूप पर टिप्पणी करता-

कहँवा के प्रजातंत्र कइसन ई शासन

पेट पर दुलती दे पीठी सहलाये।

दरद, टीस, पीड़ा के गाँव ओझल प्रकाश हो गइल
लंगड़ाइल प्रजातंत्र आज मूल्य सब उदास हो गइल

पढुआ, लिखुआ, ऊफर पड़लें
दमगर बा जाहिल के बात

आदमी त आदमी, मतदान के भी अपहरन
लोक-शासन के अनूठा भेस, कइसे का कहीं

भूख, भय के बात कबसे हो रहल, होते रही
आज ले सुधरल ना आपन देश, कइसे का कहीं
जात-मजहब के किआरी देश के बाँटत रहल
मंच पर बा मिलन के उपदेश कइसे का कहीं
हाथ में ठेला, फफोला पाँव में, किसमत बनल
भ्रष्ट शासन, गूंग अध्यादेश, कइसे का कहीं

कवि जानता कि साँच बोले-सुने के गुंजाइश अब हर जगह नइखे रहि गइल। अइसना में ऊ बहुत सोचि-समझि के जीवन में संतुलन बनावत लउकता। तमाम प्रतिकूल परिस्थितियन में भी ऊ अपना जीवन के खोराक खोज लेता, गीत-गजल के आपन पाथेय बनावता।

खून-खराबा सनल सियासत
गीत-गजल में दिल के बात

कवि एह बात से चिंतित लागता कि अब गाँवो शहर का देखा-देखी तेजी से सांस्कृतिक विचलन के शिकार हो रहल बा आ जरूरी परंपरा अउर मूल्यन के बँचावल अब खेल ठठ्ठा नइखे रहि गइल।

गँवे-गँवे गउंआ भी लागल शहराये
दोसरा का करनी पर अपने लजाये,
नाता टूटे लागल करम आ धरम से
अधजल गगरी लेखा छलकत ई जाये

सरल आ सहज लोग अक्सर विश्वासघात के शिकार होले। जीवन सही माने में बिसवासे का गोदी में पले-बढ़ेला आ साँसो लेला। बाकिर तीन-पाँच से अलग जीवन जिए वाला लोग अक्सर एहिजे मार खा जाला। रहीम आदि अनेक कवि पहिलहीं से मना कर रहल बाड़े कि आपन दर्द अनका से जनि बतावल जाउ-

रहिमन निज मन की व्यथा, मन ही राखौं गोय।
सुनि अठिलैहें लोग सब, बाँटि न लइहें कोय।
कवियो एकर समर्थन करता-

अगराइले गोड़ मत बढ़ाव
हर राह मंजिल ना सुझावे
बिसवासे का ठेहा पर
जिबह हो जाला जिनगी

कवि ज्ञान आ प्रेम में प्रेम के चुनता। तुलसी से सूर तक ईहे होत
आइल बा। कवि आपन तर्क देता-
ज्ञान बाँटे हमेसा भरम के धुआँ
प्यार दिअना के नेहिया के बाती हवे

उधव आपन गेआन-गठरी जनि खोलऽ
राधा का अँखिया में कान्हा के काजर

ऋतु के असर हमनी का जिनिगी पर साफ-साफ लउकेला। के ना
प्रभावित होला बसंत, गरमी, बरसात आ जाड़ा से ? फगुआ केकरा के पागल ना
बनावेला, चइता से कजरी तक अइसहीं देंहि में कुछ उदबेगले रहेला। फगुआ के
त मौसम अपने आप में मादक हटे, केहूँ अपना बस में ना रहे-

जाने कतना रस के गगरी फूट गइल बा फागुन में
रिश्ता, नाता, संयम, सगरी टूट गइल बा फागुन में
कतना रखीं अलोता मन के, धूप, रूप के खींच रहल
धरम-करम के पोथी-पतरा, झूठ भइल बा फागुन में
बाकिर लागता कि आधुनिकता के राछछ ई सब सुख आ आनंद ठाढ़े लील गइल
बा।

बिरजू काका का मड़ई में अब आल्हा के बोल कहाँ
थिरके अँगुरी, चाँटा चटके जादू के ऊ ढोल कहाँ
कजरी के बोली बसिआइल ठप्पा ठुमरी मरुआइल
नशा पॉप के चढ़ल जवानी फास्ट रिदिम में बउराइल

पता ना ई आधुनिकता कइसन बा कि ओकरा अगुआनी में आदमी
अतना भुला गइल बा कि ओकरा एकर तनिको अंदाजा नइखे कि
जिनगी के अँखुआइल सपना गँवें-गवें बा टूट रहल
कैक्टस का आगे फूलन से रिश्ता-नाता छूट रहल
कम्प्यूटर में रचल-बसल हर लोग अकिल के बाप भइल
हाव विदेशी, चाव विदेशी देशी अब अभिशाप भइल

कविता के जनम हमेशा दरद का कोंखि से होत आइल बा। कवि के
अनुभव भी एकर समर्थन करता।

कविता का कोखी में दरद के जखीरा
बाँझ का समझी परसउती के पीरा

कवि आज का बदलाव से बहुत चिंतित बा। बदलाव हर समय में होत रहल बा बाकिर एह पारी के बदलाव घोंटात नइखे, लागता जइसे सब तहस-नहस हो गइल।

उहे चान बा, उहे गगन बा, धरती काहे बदलल ?
समुझ न आवे, कइसे उपजल जाति धरम के खेती
कवना कारन मानवता के हिया बनल ई रेती...
आँख-आँख में घृणा, करेजा में भय के छाया बा...
जोत अलोट, नेह के दिअना कइसे छन में झपकल

एह भयावह स्थिति का पाछा ऊ राजनीति के करिखाह गलियारा के जिम्मेवार मानता। कवि सियासत का जिनिगी के बहुत करीब से देखले बा। ऊ जानता कि रउआँ अन्हार नीक ना लागी, अँजोर सभका नीक लागेला बाकिर ऊ देखाऊ साह के डाल होला, ओकर असली राहि से गंतव्य तक अन्हारे होला, अँजोर त घलुआ में मिलेला बाकिर ओकरे जे अन्हार के व्यापार करेला, अन्हार के आपन ताकत बनावेला। अन्हारिया के सरपला से कुछ ना होई एकरा आँचर के फइलाव दूर-दूर तक बा। पाप, पुत्र, ऊँच-खाल- सब एकरे छाँह में तोपा जाला।

जब-जब सभ्य आ सराहल लोगिन के
मन के हिरना कुछ जागेला
जब-जब, सत्ता के रावन
जनता-सीता का हक पर डाका डालेला
ओकर रथ अन्हारे में हँकाला
मंत्र, अफसर, दलाल सबके
जिअतार बनावेला अन्हार

राजनीति का अन्हारिया वाली ताकत से कवि बहुत परिचित बा। ओकरा लागता कि एह दौर में क्रांति एकमात्र विकल्प बा। बाकिर ऊ ईहो जानता कि ई राहि खाली काँट-कुश से ना अपरिमित खतरा से भरल बिया एहसे ऊ जुगुति भिड़ावे के बात करता।

मँगला से रोटी ना भेंटी छीने के तू जुगत भिड़ावऽ।

दुष्यंत कुमार भी क्रांति का राहि में सुरक्षा का लेहाज से अंजाम का ओरि भी इशारा कइले बाड़े-

तेरा निज़ाम है, सिल दे जुबान शायर की

ये एहतियात ज़रूरी है इस बहर के लिए।

हालांकि साँच पूछीं त कवि अँजोर का विकल्प पर विश्वास राखता। एहसे अंत में ऊ तूफान नियन अन्हरिया का तात्कालिक आ बरियार ताकत का सामने अँजोर वाला विकल्प 'ज्ञान' के राखता। ओकरा विश्वास बा कि एही से आपराधिक दुनिया का अन्हार के सामना कइल जा सकत बा आ ओहके हरावल जा सकत बा।

ई अन्हरिया युगन से रगेदत रहल

रउआ खेदब ना जबले, सतइबे करी

ज्ञान के तीर मारीं, अमावस कटी

चान खुलके खिली, मुसकुरइबे करी

कवि विश्वस्त भाव से ज्ञान-गंगा के ले आवे खातिर चाहता कि शिक्षा का दिशा में

सभ मिल-जुल के खूब कोशिश करो, एक ना एक दिन बदलाव अइबे करी।

हाथ पर हाथ धरिके ना सोचल करीं रउआ आगे बढीं, लोग अइबे करी

ज्ञान-गंगा के खातिर भगीरथ बनीं धार छलकी त लोगवा नहइबे करी

भलहीं कवि के कतहीं विश्वास लाएक कुछ लउकत नइखे-

कहँवा, केकरा, भरोस पर जाई

हर पड़ाव पर जमल जुआ बाटे

बाकिर शिक्षा का ताकत पर ओकरा भरोसा बा। बच्चू पांडेय जी के कवि ई संदेश

दिहल चाहता कि आई जा, एकरे अँजोरा में हमनी के आपन हक मिली, अपना

नगर, डगर आ गाँव के सभ्यता आ संस्कृति के बैचा पाइबि जा।

ओकरे खातिर हम लहका देनी आखर के असली अलाव

एकरा अंजोरिया में पहचानी आपन हक नगर-डगर गाँव

आखर कविता के मरम होला

आखर त सबकर धरम होला

आखर बिन जग के आंगन सूना

आखर बिन धरती के दुख दूना

संपर्क :

देवनगर, निकट- पिपरा प्राइमरी गवर्नमेंट स्कूल, पोल नं. 28

पो.- मनोहरपुर कछुआरा, पटना-800030 मो. 9831649817

डॉ कमलेश राय के एगो गजल से गुफ्तगू विष्णुदेव तिवारी



अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन के कार्यकारिणी के बइठक, जवन १३ जुलाई २०२५ के पटना में भइल रहे, ओमे डॉ कमलेश राय आपन नया-नया रचाइल हई गजल गाके सुनवले रहलन—

देखीला सुधि क झाँकि के दरपन कबों-कबों
आवे इयाद नेह क आँगन कबों-कबों ॥
अइलीं शहर में रुठि के हम घर बिसारि के
अबहूँ हवा करेले मनावन कबों-कबों ॥
हमरा बदे त हर घरी मौसम रहल उदास
जिनगी में पवलीं भोर सुहावन कबों-कबों ॥
जाने कहाँ-कहाँ उड़े बदरा के पाँखि से
उतरेला हमरा गाँव में सावन कबों कबों ॥
पाथर भइल समय क ई बदले बदे मिजाज
हमहूँ करीं जतन आ उधापन कबों-कबों ॥

डॉ राय साहित्य में अपना सरस भोजपुरी गीतन खातिर प्रसिद्ध हवन, बाकिर उनकर गजलो ओतने सेसर, व्यंजनापरक आ युग-संदर्भन से जुटल रहे वाली होली स। डॉ राय के हर रचना हृदय से उगल, काव्य के शास्त्रीय विधान पर कसल आ एही से आन लिखनिहार लोगन से अलग, समय के लिलार पर अपना दार्शनिक आभा से विलसत लउकेली स। डॉ राय एगो अउरी वजह से अपना समकालीन साहित्यकारन से हिगरा जालन। अइसन बहुत कम, साइते-संजोगे, सर्जक-साहित्यकार लउकेलन जिनका ताल-मात्रा के सही ज्ञान होला आ ऊ मुग्ध क देबे वाला सुर-लय में गा पावेलन। राय साहेब जब गावेलन त जनाला सब अग-जग चुप होके सरस्वती के एह महान साधक के हर उठान, ठहराव आ झुकान पर पँवरत होखे। हमनी के शास्त्रीय ग्रंथन में जवना ‘ब्रह्मानंद सहोदर’ के बात कइल गइल बा, डॉ कमलेश राय ओकर सोगहग रूप उपस्थित क देबेलन।

आदमी के मन के भीतर पता ना, कतना ना का-का भरल बा, जेमें बेसी सुधियन के जखीरा बा, जहँवा करुआ जादा-जादा बा आ मीठ कम-कम। जइसे धन आवेश ऋण आवेश के अपना ओर खींचेला भा ओकरा ओर खिंचाला ओसहीं सुधियन के हाल बा। वर्तमान के सुखद पल अतीत के दुखद पलन के आ वर्तमान के दुखद पल अतीत के सुखद पलन के अपना ओर खींचल

चाहेलन। ई मन के विज्ञान ह आ जब-जब अवसर जुटेला ऊ एकर विज्ञापन करत रहेला—

देखींला सुधि क झाँकि क दरपन कबों-कबों।

आवे इयाद नेह के आँगन कबों-कबों॥

‘नेह क आँगन’ के याद अइला के मतलबे भइल ओह समूचा परिवेश के मन पर गइल जहाँ से नेह मिलत रहे, जहाँ के कन-कन नेह से गोताइल रहे, जहाँ के कन-कन से नेह सरवत रहे अविरल। वर्तमान अइसन रहल ना— ना ऊ परिवेश रहल, ना ओह परिवेश के नेह से गोत देबे वाला मानुष। जड़ से विलग होखला के दर्द ऊहे जानीं जेकरा मन के संवेदन-ग्रंथि सूख नइखी स गइल। ऊ बेर-बेर एह अनेह वाला, बिन चाहल मिलल बान्ह के, उतार फेंके खातिर जतन आ उधापन करी चाहे एह कार में ओकर बउसाव सफल होखे भा ना—

पाथर भइल समय के ई बदले बदे मिजाज।

हमहूँ करीं जतन आ उधापन कबों-कबों॥

जड़ से विलग होखे के वजह खाली रोजी-रोजगार के तलाशे ना होला। सत्ता के कूर आ घिनावन चेहरा भी कबो-कबो पलायन खातिर मजबूर क देला। हर जतन, हर कोशिश फेल कर जाला आ आदमी कुहुकत, कबो रो-रो के छपिटात अपना लोगन के, अपना नेह के ओह भूँइ के मन में बसवले-बसवले आपन बसेरा उड़ास लेला जे कबो ओकरा प्राणन के आधार रहल रहे, जेकरा से जिनगी के सुंदर सरोकार जुटल रहे।

अमर कृति ‘डिवाइन कॉमेडी’ के रचयिता इटालियन कवि दान्ते एलिगिअरी(१२६५-१३२१) के भरल जवानी में आपन जनमभूँइ फ्लोरेंस छोड़े परल रहे। उनका ऊपर अनघा झूठ ममिला बनावल गइल आ फ्लोरेंस के नगरपरिषद ई आदेश पारित कइलस कि यदि ऊ फ्लोरेंस अइहें त बीच चउराहा पर उनके जिंदा जरा दिहल जाई। आपन बाकी बाँचल उमिर एह महाकवि के इटली के कई जगहन में घूमत-छिछिआत अंत में रेवेना नाँव के जगह में निर्वासित गुजारे परल रहे। उनकर मये धन-संपत ब्लैक जेल्फ कहाए वाला लोग हड़प लिहल। अपना घर-परिवार— मेहरारू आ बाल-बच्चन से दूर रहत एगो विश्व-विभूति मात्र छप्पन बरिस के उमिर में परान त्याग देले रहे। उहाँ-इहाँ— सगरे आततायी अतीत अइसन अनेक परतोखन से भरल बा।

आज फ्लोरेंस शहर अपना कुकृत्य पर पछता रहल बा आ समूच संसार से माफी माँगत अपना सुंदरतम मानव-रतन के प्रति अपना पूर्वजन के द्वारा कइल गइल अपराध पर शर्मसार हो रहल बा।

दान्ते के अपराध का रहे— इहे नूँ कि ऊ अपना लोगन से प्रेम करत

रहलन आ उनका बेहतरी खातिर सक्रिय राजनीति में बढ़-चढ़के भाग लेत रहलन? धर्म के धंधा बनाके जनता के ठगे वाला लोगन के खिलाफ मोरचा खोलले रहलन?... आ कविता करत रहलन?

हाँलाकि डॉ राय अइसन कवनो सूत्र के उल्लेख नइखन कइले कि उनका कवि के अपना गाँव-घर आ अपना लोगन के छोड़े के पाछा कवनो राजनीतिक कारण रहे। उनका अनुसार त ऊ रुसला-फुलला में घर बिसारि के शहर में पनाह लिहलस, जेकर मतलब ओजवाँ से बेहतर भविष्य के खोज हो सकत बा—

अइलीं शहर में रुठि के हम घर बिसारि के।

अबहूँ हवा करेले मनावन कबों-कबों ॥

का पता कवि के घर छोड़े के पाछा संसार के नीक से समुझे-बूझे के चाह होखे, जिनगी के हर रंग जाने के ललक होखे, जइसन कि अँगरेज मेटाफिजिकल कवि जॉन डन (१५७२-१६३१) अपना प्रेमिका से कहले रहलन (स्वीटेस्ट लव आई डू नॉट गो') आ ऊ कुछ दिन घूम-फिर के फेर से अपना नेह के आँगन में खुशी-खुशी लवट आई—

Yesternight the sun went hence,

And yet is here today;

He hath no desire nor sense,

Nor half so short a way:

Then fear not me,

But believe that I shall make

peedier journeys, since I take

More wings and spurrs than he.

जॉन डन कमाल के बात कऽ रहल बाड़े। ऊ कहते बाड़े कि उनकर राहि सूरज से बेसी दूरी चले वाली बा। सूरज त इच्छाहीन आ बोध-बिहून होखला के चलते झट दे उगेले आ पट दे बिसवेले— पुरुब से पच्छिम एकदम सीध-सिधाई में उनकर राह बा। ऊपरे-ऊपर दउरेले। कबो नीचे उतरे के त बा ना! हमरा धरती पर रहे के बा, चले के बा, लोगन से मिले के बा, उनकर दुख-तकलीफ समुझे-बूझे के बा, बल-बउसाव भर उनका खातिर करे-धरे के बा। तबो ऊ सूरज से तेज चलिहें काहें कि उनका पासे कल्पना के डैना (पाँखि) आ प्रेम के दृढ़ता के रकाब बा।

जॉन डन एह कविता के अंत में कहत बाड़े कि जे एक-दोसरा के अपना मन में जिंदा राखेला, ऊ एक-दोसरा से अलग होइए ना सके—

They who one another keep
Alive, ne'er parted be.

सच्चा प्रेमी अपना लोगन से पलो भर खातिर विलग ना होखे ।

डॉ कमलेश राय के 'रुसला' के अनेक निहितार्थ हो सकत बा । ई कवि के सामर्थ्य बा कि एगो शब्द के गर्भ में ऊ कई-कई अर्थ लुकववले रहत बा, जेकरा के मन से खोलीं त खुली, बेमन से खोलीं त अँटक जाई ।

जतना फूल-पतई-फर अपना जऽरि खातिर तड़पेला ओसे कम ना जऽरि अपना एह सब खातिर तड़पेले । जबले सब काँच-काँच रहेला तबले ऊ एक ओर माटी के त दोसरा ओर तना-डाढ़ि-पतई के अपना जोर भर पकड़ले रहेले । फूल अपने से झरे त झरे भा हवा झार दे, पतई अपने से गिरे त गिरे भा घाम जारि दे, फर अपने से टपके त टपके भा बरखा टपका दे, सबके नजर से अलोपित जऽरि अपना जाई-छाई के अपना से अलग कइल कबो ना चाहे ।

जवना माटी, हवा, पानी से मानुष तन-मन पनकल आ गोटगर भइल ऊ हवा, पानी, धरा -- ओके अपना ओर से कइसे बइला दिही? रूसियो-फूलि के गइला पर ऊ मनावन करी । बेर-बेर याद पराई आपन नेह गोहराई ।

ई प्रेम आ ई संवेदना एकतरफा ना होला । केहू एके सुनेला, केहू सुने ना आ केहू सुनियो के महटिया जाला ।

मन के एगो विशेष गुण ह- भटकल । ऊ एक जगहा टिके के नाँवे ना लेइ, बाकिर इहो ओकर विशेष गुण ह कि जब ऊ नेह के आँगन में भटके शुरू करेला त ओहिजा से हाल दे टसकहूँ के नाँव ना लेइ । सूर के कृष्ण के हाल नीचे लिखल गइल पाँतिन में देखे लायक बा-

ऊधो मोहि ब्रज बिसरत नाहीं ।

हंससुता की सुन्दर कगरी अरु तरुवर की छाहीं ॥

वै सुरभी वै बच्छ दोहनी खरिक दुहावन जाहीं ।

ग्वाल बाल सब करत कुलाहल नाचत गहि-गहि बाँहीं ॥

यह मथुरा कंचन की नगरी मनि-मुक्ता जिहि माहीं ।

जबहिं सुरति आवत वा सुख की जिय उमगत सुध नाहीं ।।

ब्रजभूमि गाँव-देहात रहे । मथुरा सुख-सुविधा से भरल अजाची शहर, बाकिर ब्रजराज के मन जब कबो अतीत के 'सुर अमर मुनि दुर्लभ सुख' के स्मृति में घेराइ, ऊ वर्तमान के सब वैभव भुलाके, ओकरे में लीन हो जात रहसु ।

जब परमात्मा के ई दशा बा त साधारण जीव के का होत होई, कहे के जरूरत नइखे ।

भरला पेट के आ खलिहा पेट के दशा एके नियर ना होला, बाकिर

अपना जनमभूँइ के प्रति प्रेम के ममिला में अइसन ना कहल जा सके कि भरलका के प्रेम खलिहका के प्रेम से कम होला। प्रेम के गति के नपने दोसर होला।

भोजपुरी कवि डॉ ब्रजभूषण मिश्र के एगो कविता 'बिहारी मजदूर' रोजी-रोजगार खातिर बहरा जाये वाला मजूरन के दुख-दरद के बीच अपना जनमभूँइ के प्रति उहन लोग के अथाह नेह के व्यक्त करत बिया, जहाँ व्यवस्था के करिआह कुहा के बीच से उगत आ परवान चढ़त उहन लोग के प्रेम सहज संवेदना से भर देत बा—

आवे लागेला इयाद

आपन देश,

जाने कइसे दो

देश में

मिलल बा परदेस।

‘देश में मिलल बा परदेस’ ई पद बड़ा व्यंजक आ हृदय द्रावक बा। भाषा के नाँव पर महाराष्ट्र आ भारत के कुछ अन्यो राज्यन में बिहारी आ कुछ दोसरो राज्यन के मजूरन के साथे हाले में घटल आ अक्सर घट जाए वाली घटनन के अँजोर में एह पँक्तियन के करूणा अउर बढ़ जाई।

परदेशी हो जाये वाला मजूरन के बेबस जिनगी के भोर कबहीं-कबो सुहावन रहे भा बटुए—

हमरा बदे त हर घरी मौसम रहल उदास।

जिनगी में पवलीं भोर सुहावन कबों-कबों।।

मौसम कवि खातिर हर घरी उदास रहे, जब से ऊ देशांतर कइलस तबे से। एकर एगो इहो अर्थ भइल कि मौसम चाहे जइसन रहत होखे कवि के ऊ हरमेस उदासे लागे काहें से कि कवि उदास रहे।

कवि एह से उदास रहे कि ऊ गाँव से रूस के शहर में आइल। ओकर उदासी अउर बढ़ गइल एह से कि शहर में ओकरा के रोजगार त मिलल बाकिर ऊ नेह ना मिलल जे तृप्ति के आधार होला।

प्रकृति आ मानव के बीच के रागात्मक संबंधन के चर्चा हर देश के साहित्य में भइल बा। आज के विज्ञान भी एह बात के माने में उजुर नइखे करत कि जवन हाथ फूल के पानी से पटवत बा जदि ऊ ओह फूल के घास साफ करत, खुरूपी से कटा-छिला जात बा, त फूल उदास हो जात बा। भोजपुरी के एगो लोकगीत में कथा आइल बा कि सिधवा आ निरछल रानी के, ओकरा सवतिन के डाह से, जब राजा देश निकाला दे दिहलन त बन के मये कोइलरि

रोवे लगली स। रानी पंछियन के बहुत मानत रहली आ कोइलरि नियर गावतो रहली।

‘जिनगी में पवनी भोर सुहावन कबों-कबों’ में व्यक्तिगत दुख आ पीरा के अभिव्यक्ति के साथ-साथ समूह के दर्द के बीच से खुशी के भी प्रगटन बा।

जब व्यक्तिगत पीर पराकाष्ठा पर चहुँप जाला त ऊ संसार के सुच्चा पीर के इजहार बन जाला। शर्त इहे बा कि एहमें कुछुओ देखउआ नत होखे। कालिदास के यक्ष के पीर समस्त प्रेमी हृदय के पीर ह आ यक्ष के पीर केकर पीर ह? बेशक कालिदास के। हिंदी के रीतिकालीन कवि घनानंद बदरिन से निहोरा करत कहले रहले कि ऊ लोग उनका लोर के ले जाके सुजान के आँगन में बरिसा देसु ताकि उनका अपना प्रेमी के अनंत ऊँचाई वाला नेह के विश्वास हो सके— कबहूँ वो बिसासी सुजान के आँगन मो अँसुवानहिं लैं बरसौं।

बाकिर एह में काल के बान्ह ना रहे। ई ना रहे कि काल्हुए चाहे परसवे बरिसे के बा। कबहुँओ माने कबो, जब भरोसा हो जाऊ कि एहिजा जवन बा, सब साँच-साँच बा।

एह ‘कबो’ के दोहरा के आधुनिक कवि कइसन व्यंजना उगा रहल बा, देखे लायक बा—

जाने कहाँ-कहाँ उड़े बदरा के पाँखि से।

उतरेला हमरा गाँव में सावन कबों-कबों ॥

बदरा के पाँख पर असवार सावन पता ना, कहाँ-कहाँ ना उड़े बाकिर कवि के गाँव में, जहाँ ओकर नेह के आँगन बा, ऊ कबहीं-कबो बरिसेला। काहें? एकर अनगिनत उत्तर बा। शायद ओतने जतना अपना गाँव-घर से रुसि-फूलि के लोग बहरा गइल बा। संभव बा, बादर पर बइठल सावन पहिले ओह लोग के घरे-अँगने उतर आवत होखे जहाँ छत-छप्पर टूटल-फूटल होखे, खटियो टूटल होखे बाकिर प्रिय के बाँहि प्रिया के अँकवारी बन्हले होखे। जहाँ अभावो में स्वभावतः सुख लोटत होखे ओहिजा जाए में मानव भले मुँह बिदोरे, प्रकृति अपना संपूर्ण वैभव के साथ धउरल जाई। (भारतेंदु)

संपर्क : तिवारीपुर, पो. दहिवर, जि. बक्सर (बिहार)

सँझवत के अगिला अंक
डॉ. नंदकिशोर तिवारी विशेषांक



गीत

बरसाती अँखियन के सावन

रामेश्वर प्रसाद सिन्हा 'पीयूष'



बरसाती अँखियन के सावन
अतना सोखी पर उतरित ना
एको बेर चरन जे तू दुअरा
पर कबो बढवले रहित ।

हियरा का हर तार-तार में
नेह कसाइल बडुए तहरे
सुधियन का हर पोर-पोर में
लहर भराइल बडुए तहरे

साध बिअहुती चुनरी पहिरिति,
सपना रचित गीत फागुन के
एको बेर नयन निरमल जे
हमरा ओर घुमवले रहित ।

ललसा का हाथन पर कबहूँ
चढ़ल मेंहदी के ना पानी
दरद छीनि लिहलस मधुआइल
जिनिगी के मुँहजोर जवानी

अतना लमहर भइल रहित ना
जिनिगी के वीरान उमिरिया
एको बेर अगर पीरा के
आँचर तू सहलवले रहित ।

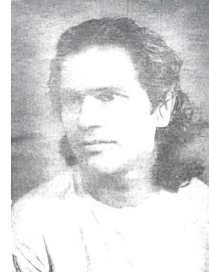
मन का मन्दिर में असरा के
निसदिन अनहद संख बजेला
तहरे आगम में आँतर के
भीतर जगमग दीप सजेला

साँस-साँस चन्दन-अस गमकित,
लोर बिखर जाइत अक्षत बन
एको बेर कतो जे बिसवासन
के प्यास बुझवले रहित ।

पात-पात में पीर भरल बा
फूल-फूल बडुए कुम्हिलाइल
उकठल जिनिगी का डेहुँगी में
गतर-गतर बा काँट गँथाइल

कँहरिति ना अमरइया अतना,
अतना ना कुहुँकित कोइलिया
एको बेर कबो जे तू गीतन के
ओठ लगवले रहित ।

संपर्क : शंकर भवन, सिविल लाइंस, बक्सर (बिहार)



आइल शरद सुकुमार
डॉ. रामनाथ पाठक 'प्रणयी'

आइल शरद सुकुमार !
शोभेला नयना कजरवा से केकर,
टिकुली से केकर लिलार !
आइल शरद सुकुमार !

सोना के सितुही में भर गइले मोती..
सगरे बधारी में उतरल बा जोती,
अरिया-पगरिया प सुगनी सुगनवा,
नाचि उठल मनवाँ हमार !
आइल शरद सुकुमार !

कतना गरीबन के लवटल बा आसा,
कतना के जिनिगी के पलटल बा पासा,
घेरि-घेरि चन्दा के बइठल तरेगन,
लागल गगन में बजार !
आइल शरद सुकुमार !

अंगना से दुअरा ले सुन्दर-सुहावन,
बरसेला भुइँया किरिनियाँ के सावन,
बतिया पिरितिया के रतिया में सुनि-सुनि
भोरे हँसल हरसिंगार !
आइल शरद सुकुमार !

दू गो गजल

भगवती प्रसाद द्विवेदी



1.
दाना खूब छिटाए लागल ।
जाल बिछावल जाए लागल ।

होड़ कबूतर में लागल बा,
चिरई-मन अग्राए लागल ।

माथ नवावत टोपी धावे,
जन-जन देखि चिहाए लागल ।

रावन लागे राम-बिभीसन,
लीला खास बुझाए लागल ।

सियरा रंग बदललसि भइया,
कपटी चाल चिन्हाए लागल ।

2.
भीड़ो में बानीं अकसरुआ ।
गइया के ना साथ बछरुआ ।

जहँवें देखीं, उहँवें लउके,
चामे के घर, कुकुर पहरुआ ।

गर में बाटे बान्हल 'जाई',
हुलसत ना, मिमियात पठरुआ ।

घर के भेदी लंका ढावे,
अपनन से अलचार झगरुआ ।

हरदम लगहीं राखल चाहे,
बाबूजी -अस गाँव दुलरुआ ।

सर्जना, बिस्कुट फैक्ट्री रोड, मगध आईटीआई के निकट, नासरीगंज, दानापुर,
पटना- 801503 (बिहार) चलभाष : 9304693031

गीत

कउआ कान लेले जाला श्रीभगवान पाण्डेय



आजु अचानक भोरे भोरे
भइल जोर से हाला ।
हाँक लगावत पच्छिम टोला
डॉक डॉक चिचिआला ।
कउआ कान लेले जाला

सूतल जे निरभेद रहे
सभ अकबकाइ के जागल ।
जवन भेंटाइल हाथे लेके
पाछा पाछा लागल ।
लाठी अउर गँड़ासा
केहू लेके बरछी भाला ।
कउआ कान लेले जाला

लुत्ती अइसन खबर उड़ल
आ गाँवे-गाँव पटाइल
हाहाकार मचल अइसन
कतने खरिहान फुँकाइल
अफरा-तफरी में जौ के सड
घून पिसाइल जाला ।
कउआ कान ले ले जाला ।।

केहू बोले कान गइल अब
आँखि बाँचि ना पाई
केहू हल्ला कइलसि
अब त नकियो काटल जाई
आन्हर कुकुर बतासे भूँकत,
जइसे भागल जाला ।
कउआ कान ले ले जाला ।।

कुछ उतपाती मिलके सँवसे
गाँव जवार डोलावे
संग जमूरा अउर मदारी
भय के भूत बोलावे
बइठल दूर तमाशा देखे,
आगि लगावेवाला
कउआ कान लेले जाला ।।

एही अगिया रोटी सेंके
खिचड़ी चलल पकावे
बाकिर पानी अतना काड़ा,
दालि गले ना पावे ।
कतने ज्ञानी लागल बाड़े
दालि गलावेवाला ।
कउआ कान ले ले जाला ।।

कान छुए ना केहू
कउआ का पाछा सभ धावे
एही बीचे केहू लागल
मुखिया के गरियावे
आँखि खोलि के देखीं,
कतने मिली दाल में काला ।
कउआ कान लेले जाला ।।

कान छुई रउरे पासे बा,
केहू ना ले भागल ।
मुँहनोचवा अस हावा उड़ल,
गाँव भइल बा पागल ।
खोजी मिल जाई गऊँ में,
चैन चोरावेवाला ।
कउआ कान ले ले जाला ।।

शिवगोविंदायतन, राम बाग, पी पी
रोड बक्सर (बिहार) ।

नवगीत

सूरुज से ओरहन सौरभ पाण्डेय



सूरुज से अब ओरहन कइसन
मन के दुपहर बीत रहल बा

माँडे भखरा लिलरे टिकुली
लवँग नाक में, काढ़ल केस
एक जमाना बीत गइल बा
मन से गावल भाव-सनेस

बेरा कवन, कुबेरा कइसन
नेह-हिया में फाँस गइल बा

कबके उतरल चढ़ल रात, भा
कबके फूटल नवका भोर
ओरी-आँडन तिकवत नइखे
अब दुअरा-दरवाजा ओर

का पूछीं अब हे कागा से
बइठ मुँड़ेरे उकिर रहल बा

सोचल कब होखे के होला
तबहूँ काहें जागल आस
पाकल घाव टभकतो नइखे
नइखे कवनो दरद अभास

का होई तब जीउ जाँत के
सउँसे बउखल बान बढ़ल बा

एम-2/ ए-17, पी.डी.ए. कॉलोनी,
नैनी, प्रयागराज-211008 (उप्र)

गीत

दुर्गा मइया से सीखs

मनोज भावुक



तोहरा में बा बहुते जोर
नारी तू नइखू कमजोर
दुर्गा मइया से सीखs ना धूल चटावे के
दुष्ट-पापियन के मारे के, सबक सिखावे के

मर्यादा पर हाथ बढ़ावे केहू त ललकारs
चंडी बन जा, खूब दहाड़s, पटक-पटक के मारs
मत सीखs खाली पूजा के थाल सजावे के
दुर्गा मइया से सीखs ना धूल चटावे के...

मूरत बन जइबू त होई मूरत वाला हाल
तोहरे सोझा दारु पीके लोगवा करी बवाल
जिंदा हऊ त चाहीं जिंदा नजर भी आवे के
दुर्गा मइया से सीखs ना धूल चटावे के...

मुश्किल से आजिज आके मत जीवन खतम करs
बनs लड़ाका, जहाँ जरूरत होखे खूब लड़s
छोड़s आददुर्गा मइया से सीखs ना धूल चटावे के...
त बात-बात पर लोर चुआवे के

सीता जइसन धीरज राखs, छठी मइया जस ममता
हर साँचा में ढालs खुद के, तोहरा में बा क्षमता
जइसन देश बा ओइसन चाहीं भेष बनावे के
दुर्गा मइया से सीखs ना धूल चटावे के...

संपादक, भोजपुरी जंक्शन पत्रिका

कविता



घास गढ़े के मन बा का हो ?

डॉ. राजू प्रसाद 'मोजर छपरहिया'

ए बबुआ घास गढ़े के मन बा का हो ?
बिना पढ़ले पास करे के मन बा का हो ?

आपन त नासिये दिहल जिनगी लफुअई में
कुलवो के नाश करे के मन बा का हो ?

मूड़ी डुबवले बाड़ फोनवे में दिन राति
बैरथ बकवास करे के मन बा का हो ?

बाप के दरद पीड़ा लोर नाहीं लउकेला
घरे रोवेल माई के काहें ना लउकेला हो

मन लगा के पढ़ब त बनि जइब कुछुओ
तबे नु अगुआ अइहें होई बियाहो हो ।

कब ले छिछिअइब बहेंगवा लेखा एने-ओने
धंधा में लाग कवनो लोगवो सराहो हो ।

तींते कहेले 'मोजर' बतिया त तींते लागी
अइसन कर कि माथा बापो के ऊँचा हो ।



बरखा

अयोध्याप्रसाद उपाध्याय

आइल बा बरखा बहार
रिमझिम बरसत बा फुहार
खेतन में मजदूर किसान
जेकर गीत बा गावत जहान
बिआ कबारत बोझा ढोवत
रोपनहारिन से हँसत बोलत
जिनगी के सुख दुख कहत
बुनी पानी सब कुछ सहत
जे मिलल ओकरा के खइले
बतिआवत सभ दरद भुलइले
नीक लागे देखि के रोपनी
रोपनहारिन के माथे तोपनी
तबहियों सभ देहिया भींजल
मरद मेहरारु दोसरा प रीझल
कबो कबो होखे जबहीं घाम
जरे लागे तब देहिया के चाम
छन भर में लागे पानी बरसे
रोपनी गीत सुने के मन तरसे
बरसे कबहियों मूसलधार पानी
खेतन में तब बिहँसे लागे जवानी
राजा रंक फकीर के एके हाल
बरखा कारण बदलल चाल
आर पगार प ऽ गिरत भहरात
खुशी के मारे सबहीं मन अघात
सब केहू मउज मस्ती मनावत
रोपनहारिन के देखि देखि गावत
एक दोसरा प ऽ फेंके लागे पाँकी
बरखा में भींजत नीमन लागे झाँकी ।

डीएम कोठी के पास, आरा-802301
मोबाइल- 9470640432

कविता

किसान के पीड़ा

उमेश कुमार पाठक 'रवि'



हम किसान के बात कहीं का?
हम ताकत असमान रहीं का ?

भइया, चाचा, कका रहे सब,
पिछड़ा, अगड़ा, दलित कहे अब,
संविधान के घात नहीं का ?

जाति-जाति के लड़ा मुआ के,
सहज किसानी धुआँ-धुआँ के,
रजधानी के लात सहीं का?

जाति देखि के गिने गरीबी?
जाति देखि के बने करीबी,
मजहब के उत्पात गहीं का?

पाक व बंगला बनल लाश पर,
मिटत सनातन झूठ आस पर,
आतंकी उत्पात दहीं का?

गद्दारन के चानी सगरे
कायर भाई-चारा रगरे,
घात अउर प्रतिघात महीं का?

बेटी, कर्जा डूबल घर में ,
चुअत टाटी, पाई न कर में,
लूटतंत्र के जाल बहीं का ?

हमर अजादी कहिया आई,
सुगिया, मुनिया कहिया गाई,
हम किसान चिचिआत डहीं का ।

संपर्क :
वनशक्ति नगर, वार्ड 8, महिला
आईटीआई रोड, बक्सर, बिहार-802101

आँखि रहत

डॉ. शारदा पाण्डेय



साँझ के बेरा! धरती आसमान दूनू लाल। भगवान भास्कर डूबे के तइयारी में। लाल बिम्ब से झरत लाल किरिन के धरती पर स्पर्श जइसे आगि के नदी बहि उठल होखो। खाली कराह के ध्वनि, रोआई आ सिसकी ओह क्षेत्र में चारों ओर पसरल रहे। जइसे पीड़ा के लहर उठत होखो। आह के सागर कान से पीअत अस्त-व्यस्त वेशभूषा खुलल केश, आँखि पर पट्टी बन्हले, विषाद के साकार रूप गांधारी अंतःपुर से निकलि के जइसहीं कुरुक्षेत्र के ओर चलली उनुकर धीरज डोल गइल। बान्हल मन के गिरह खुलि गइल। जहाँ गोड़ धरसु ओहिजे से दासी थामि ले, बुझाइ जे गोड़ से कबो केहू के देहि छुआ जाउ, केहू के हाथ दबाइ जाउ। पनही चिपचिपाइ जाउ। 'आह!' 'आहि राम जी', 'पानी!' अइसन कतना आवाज काने टकराइ जाउ। उनुकर रो गनगनाइ गइल। कइसन दृश्य रहल होई? गांधारी के मन डूबे लागल। कतहीं करेजा में एगो काँट कसके लागल। मुँह से सिसकी आ आँखि से लोर बहे लागल। मन थरथरा गइल ई सोचत कि 'एमे कतहूँ हमहूँ कारन बानी। आजु कई गो बेटा फेरु धरती पर सूति गइल होइहें। सम्हारल मन फेरु डूबे लागल। उनुका आगा पूरा घटना सुनावल गइल रहे।

दुर्योधन भागि के सरोवर में लुकाइल रहले तऽ ओहजू भीम के संगे कृष्ण पहुँचले। भीम कहले, "अरे, कायर! डरपोक ! कुल्ही भाइन के मरवा के अपने आइ के एह सरोवर में लुकाइल बाड़े? ई काम वीर पुरुष के ना हऽ। बाहर निकलि के हमरा से युद्ध करऽ।"

दुर्योधन अपमान ना सहि पवलन। कहलन कि, 'हम डेराइ के ना, थाकि के आइल बानी। दू घरी विश्राम के चाहीं।'

भीम के दर्प में डूबल हुँकार भइल-, "वाह! जिनिगी भर राजसिंहासन पर बइठला के अभ्यास कइलऽ आ अब युद्धो में ऊहे तेवर बा? असली महतारी के दूध पिअले होखऽत बहरिआइ आवऽ।"

दुर्योधन के ई दाप ना सहाइल ऊ आपन गदा सम्हरले तलाब से निकलि अइले। देखले पाँचो पाँडव के संगे कृष्ण खड़ा बाड़े। ऊहे मंद मुस्कान दुर्योधन के देहि झनझना गइल। 'ईहे कृष्ण हमरा विनाश के कारण आ पाँडवन के जीत के आधार बाड़न। इनिके बल पर आजु भीम ताल ठोकि के सोझा खड़ा बा।' दुर्योधन एगो जरत हिकारती दृष्टि कृष्ण पर फेंकि के भीम से कहले- "आजु

के सर्वश्रेष्ठ सती नारी गांधारी के सन्तान हँवी। जे पर पुरुष के देखे के के कहो, अपना पति के परछाहीं बनि के अपने अपना आँखि पर पट्टी बान्हि लिहली कि सांसारिक आकर्षण के कवनो मानी नइखे। जे अपना सती धर्म के आदर्श स्वयं हवी। उनुका के ताना मारे वाला के हम क्षमा ना करि सकेनी ! आवऽ हम द्वन्द्व युद्ध खातिर तैयार बानी।

भीम दुर्योधन के बाति के पीछे के व्यंग्य से तिलमिला गइलन "ठीके कहऽतारऽ ! बाप के भगवान आन्हर कइले त महतारी अपने से आन्हर होइ के ना पत्नीधर्म निबहली ना मातृधर्म के पालन कइली। त उनुकरा सन्तान के दुर्योधन आ दुस्सासने नू बने के परी!"

दुर्योधन के मुँह तमतमा गइल। छाती में कतो कीला ठोकाइ गइल ! बीच बचाव कऽरत कृष्ण कहले, "वाग्युद्ध कइला से का लाभ बा?"

भीम खातिर अतने संकेत ढेर रहे। ऊ गदा भाँजत दुर्योधन पर जइसहीं वार कइले, दुर्योधन कगरिआइ के दाँव बचाइ गइलन। फेरु त अइसन युद्ध भइल कि ई ना बुझाउ कि अतना दिन के लड़ाई के बाद ई थाकल योद्धा के लड़ाई हऽ, कबो गदा भीम के छाती पर परे तऽ ऊ ठेहुन के बले बइस जासु, दुर्योधन के बाहिं-पीठि पर परे तऽ क्षण भर खातिर मूर्छा नियर आइ जाउ बाकिर केहू हार माने के ना आवो। कबो-कबो गदा आपुस में टकराइ जाउ त बादर नियर आवाज तऽ होखबे करो, अइसन लुतकारी छूटे कि लागे कि बिजुरी चमकि गइल होखो। दूनू जना मतवाला हाथी नियर चिघाड़त एक दोसरा पर घातक वार कऽसु। एक बेर तऽ दुर्योधन के आघात से आ फुर्तीला गदा प्रहार से भीम के हाथ के गदा छिटकि के दूर जा गिरल। भीम ओकरा के लेबे दउरलन तऽले दुर्योधन अपना ठेहुना के मार से उनका के धराशायी कऽइ के छाती पर बइठ गइलन। निगिचे रहल कि दुर्योधन के गदा से भीम के कपार चकनाचूर हो जाइत। युधिष्ठिर, अर्जुन, नकुल, सहदेव सबका मुँह से सिसकारी निकलि गइल। भीम के आँखि तनिकी भर मुँदाइल कि अब बाँचल कठिन बा। तबे एगो हाड़ा दुर्योधन के हाथ पर बइठल। ओकरा के उड़ावे के प्रयास में दुर्योधन के हाथ हिलल आ ओही घरी भीम के हाथ के धक्का से दुर्योधन के देहि लइखड़ा गइल। सभ चैन के साँस लिहल दूनू वीरन के हँफनी छूटि गइल बाकिर केहू रुके के स्थिति में ना रहल। बऽलू रहि-रहि के बुझाउ कि कहीं भीम लइखड़ा मत जासु। उनुका देहि से रक्त के प्रवाह अनवरत चलत रहे, बुझाउ जइसे कुल्ही देहिए घवदाह हो गइल बा। कृष्ण से रहि ना गइल। जइसहीं दुर्योधन के पीठि उनुका ओर भइल आ भीम के मुँह; तऽ आँखि मिलते ऊ दुर्योधन के जाँघि के ओर संकेत कइले।

भीम के आगा दुर्योधन के उघार जाँघ आ गइल, जवना पर हाथ

मारत दुर्योधन ओह सभाभवन में एकवस्त्रा निरीह द्रोपदी के बइठावे के इसारा कइले रहे। भीम के आँखि में अतीत घूमि गइल। उनुका लउके लागल कि ओह घरी पाँचो भाइयन के खून खउल गइल रहे बाकिर केहू ओकरा के रोकि ना पावल। भीष्म, द्रोण के आँखि नइ गइल रहे, कृपाचार्य के मुँह पर कारिख पोता गइल। बाकिर ओकर बात सुनतो कि, "आवऽ द्रोपदी ! हमरा एह जाँघ पर बइठि जा" धृतराष्ट्र के मुँह से बकारो ना फूटल।

भीम फौफिआइ के रहि गइलन आ विकर्ण के छोड़ि के कुल्ही कौरव ठहाका लगा के हँसलन स। भीम ओही घरी भरल सभा में प्रतिज्ञा कइलन कि, "दुर्योधन हम तोहरा एह कुत्सित जाँघ के तूरि के, ओकर खून पी के आपन पिआस बुझाइब।"

क्षण भर खातिर पूरा सभागार थमथमा गइल। लहरात चाबुक नियर ई प्रतिज्ञा सभ के मन-मस्तिष्क के सनाक से चोटिल कऽ गइल। तब युधिष्ठिर के हाथ धइ के बइठवला पर क्रोध से हाँफत भीम बइठ तऽ गइलन बाकिर भीतरे-भीतर तपत रहलन। उनुकर विवशता उनुका आँखि के अंगार नियर लाल बना गइल। दुर्योधन फेरु बेताब हो गइल। शकुनि के आँखि टेढ़ हो गइल। दुर्योधन कहलस कि, "हारल जुआरी के अइसन जबान निकाले के हिम्मत ना करे के चाहीं।" पूरा वातावरण बदल गइल। छल के जीत आ बेहयायी के क्रूरता के जइसे क्षण भर खातिर केहू लगाम खींचि देले होखो। पाँचो पाण्डवन के आँखि नीचे हो गइल रहे आ द्रोपदी के गरम साँस नागिन के फुफकार नियर छा गइल रहे।

भीम के आगा आजु ओही जाँघ की ओर इसारा करत कृष्ण जइसे ओही प्रतिज्ञा के मन पार दिहलन। फेरु तऽ क्रोध में मातल भीम गदा-युद्ध के नियम के ताख पर राखि के जाँघि पर गदा से भरपूर प्रहार कइलन। जाँघि टूटि गइल आ दुर्योधन 'आहि! आहि!' करत जवन धरती पर गिरलन तऽ फेरु ना उठि पवलन।

कृष्ण के पांचजन्य आ अर्जुन के देवदत्त शंख बाजि गइल, पूरा कुरुक्षेत्र, सरोवर के एकांत एह ध्वनि से गमगमा गइल। चिरई-चुरंग थमथमा गइल! कुल्ही शिविरन में पाण्डव के जीत के लहर हिलोरे लागल। भीम के पैशाचिक हँसी, खून में डूबल देहि आ उन्मत्त नाचत मुद्रा भयानक वातावरण सिरिज गइल। गांधारी आ धृतराष्ट्र के अशुभ संकेतक अंग फरके लागल। का वंशधर निःशेष हो गइल? गांधारी के आँखि के पट्टी भींजि गइल। धृतराष्ट्र के आँखि के अन्हार अवरू गाढ़ हो गइल। सूचना तीर नियर करेजा बेधत आइल कि दुर्योधन तलाब के तीरे अशक्त पड़ल बाड़न।

गांधारी कहली "कर्णिका! रणक्षेत्र के ओर से हमरा के ओनिए ले चलऽ !" एगो लमहर दूरी ! जीवन के सिसकी आ मृत्यु के अट्टहास के बीच से एगो राजरानी के ई यात्रा तालाब पर आइके एगो पड़ाव नियर बेलमि गइल। दुर्योधन के परिचित देह के गंध एह सुनसान में; साँझ के अन्हार आँचर में बन्हाइल रहे। गांधारी के देखते दुर्योधन में जइसे जीवन आ गइल। उनुकर मन भइल दउरि के महतारी के कोरा में समा जाई। जइसे पहिले बचपन में जात रहलन। बाकिर आजु ऊ कइसे जा सकेलन। टूटल जाँघ के अशक्तता मन में एगो टीस भरि दिहलस। ऊ देखत रहि गइलन अपना लगे आवत ओह विवश-वृद्ध-श्वेतकेशी नारीमूर्ति के जेकर आँखि आपन संज्ञा आ अर्थ भुला गइल रहे। दुर्योधन के आँखि के कोर से दू बूँद लोर ढरकि गइल। आजु एही आँखि के लेइ के भीम कतना बऽड़ जीवन के सच्चाई आ ओकरा खाली मन के पीर के सभके सोझा बखिया उधार गइलन। जवन बाति ऊ कबो अपना महतारी के आगा कहे के साहस ना कइलन ऊ बात आजु भीम के मुँह से सुनि के ओकरा करेजा में बरछी नियर खोभा गइल रहे। जब-जब ओकरा जीवन में कुछ शुभ घटित होखे के भइल तब-तब कृष्ण के कुटिलाई आड़े आ गइल। दुर्योधन के आँखि छलछला गइल।

आजु मन परऽता कि युद्ध में जाए से पहिले एक दिन गांधारी कहली कि, - "दुर्योधन जइसे कर्ण के पूरा देह अभेद्य कवच से सुरक्षित हो गइल बा हमहूँ चाहतानी कि आजु हम अपना सम्पूर्ण तप के पुँजीभूत कइके तहरा देहि के वज्र बना दीहीं।" जवन आँखि के पट्टी हम बिआह से आजु तक कऽबो ना खोलनी ऊ पट्टी हम आजु तहरा खातिर खोले के तैयार बानी। तू जा, पूर्ण रूप से पवित्र आ शिशुवत् निर्वस्त्र होके आवऽ, हमरा दृष्टि के प्रभाव से तहार देहि वज्र नियर कठोर आ बलशाली हो जाई। ओपर अस्त्र-शस्त्र के कवनो प्रभाव ना पड़ी।"

दुर्योधन के हृदय के धड़कन बढ़ि गइल। राति के अन्हार में ऊ आवे के स्वीकारोक्ति दिहलन। गांधारियो मंत्राभिषिक्त होइ के राति में दुर्योधन के आवे के बाट देखत रहली। सेवकन के ओह घरी खातिर पहिलहीं निर्देश हो गइल रहे कि कुछ काल तक रानी के एकांत चाहीं। ऊ पूजा करऽतारी, एह बीच में दुर्योधन के अलावा केहू के प्रवेश वर्जित बा, ना मनला पर राजकोप के संगे दैवी कोपो सम्भव बा। राजमहल सनसना गइल। सभ के ई बात ज्ञात रहे कि राजमाता गांधारी शिव भक्त रहली आ उनुका आशीर्वाद से सम्पन्नो। ऐसे सभे कगरिआ गइल।

धृतराष्ट्र यद्यपि कि पूरा घटना ना जानत रहलन बाकिर गांधारी के तप

के ताप से ऊहो अपरिचित ना रहलन। साथ ही उनुका बुद्धि विवेक पर राजा के पूरा विश्वास रहे! एही से मन में अनेक प्रश्न के उठलो पर ऊ शांत रहलन। गांधारी अपना अनुचरी के कान्हा पर हाथ धड़ले अपना उपासना गृह में पूर्वाभिमुख होके बइठि गइली। गांधार प्रदेश के कोमल ऊन के श्वेत आसन पर बइसल, मुक्तकेशी गांधारी के सोझा स्फटिक के चन्दन-अर्चित शिवलिंग, जवना पर निरंतर अगरु-गंध से सुवासित धूम छत्र चँवर नियर सुशोभित होत रहे, पूरा वातावरण के दिव्य प्रभावलय से घेरले रहल। दुर्योधन के ध्यान आइल कि जइसहीं ऊ माता के अंतःपुर के पहिला द्वार पार कइले निःशब्द, ओइसहीं एकदम से उनुका चन्दन मिश्रित पद्मगंध के आभास भइल। साथ ही कृष्ण मुसुकात लउकलन। दुर्योधन अचरज से भरि गइलन, "कृष्ण आजु एजू अनासे कइसे"?

तऽले कृष्णो उनुका के देखलन आ दुर्योधन सटपटा गइलन। उनुकर उपेक्षा करत जइसहीं आगा जाए के गोड़ बढ़वलन कि कृष्ण हाथ धड़ के बड़ा मन्द स्वर में कहलन- "दुर्योधन! अतना गँवे-गँवे गोड़ दबवले कहाँ जा तारऽ? आ महल अतना शांत कइसे बा?" दुर्योधन कहलन कि "महल के शांति के कारण त रात्रि के अधिका बीतल बा, आ हम माता गांधारी के दर्शन के खातिर जातानीं। कृष्ण कहलन कि "तऽ एमें अतना सावधानी पूर्वक गइला के का प्रयोजन बा? चलऽ हमहूँ चलीं।"

दुर्योधन कहलन कि, 'ना, आजु केहू के भीतर प्रवेश ना हो सके। आजु खाली हमरे जाए के बा।'

कृष्ण जइसे तनी ठमकि गइलन। उनुकरा आँखि के पुतरी में एगो विशेष संकुचन भइल। दुर्योधन के मन परऽता कि ऊ फेरु आगा बढ़हीं के रहलन कि कृष्ण अतना कोमलता आ आत्मीयता से हाथ धड़लन कि स्वयं दुर्योधन कृष्ण के ओर देखे लगलन। कृष्ण कहलन, "दुर्योधन तूहूँ हमार भाइये हउव। कुछ विशेष बात होखे त बता दऽ। फुआ-फूफा स्वस्थ त बा लोग?"

दुर्योधन के मन अकुलाहट से भरि गइल, बुझाइल कि माता के दीहल समय कहीं बीति मत जाउ, बिना बतावल बुझाता कृष्ण जाहूँ ना दीहें, आ आजु त हमरा जीवन के ऐतिहासिक क्षण हऽ। आजु पहिली बेर हम अपना महतारी के खुलल आँखि देखबि। दुर्योधन के मुँह एकदमे आनन्द से खिलि गइल। ऊ तनी गर्व से भरि के कृष्ण से कहलन, "गोपाल ! आजु माता गांधारी हमरा के अपना नेत्र ज्योति से अभिषिक्त करिहें। हमरा उनुका सोझा बालकवत् जाए के बा। एही से हम अतना जल्दी में बानी।" कहत दुर्योधन के जइसहीं डेग आगा बढ़ल कि कृष्ण कहलन "दुर्योधन! एक क्षण रुकि जा। आजु तू साँचो भाग्यशाली बाइऽ।

मर्यादिते रूप में सोझा जइहऽ ! कहीं पतिव्रता गांधारी के दृष्टि तेज पहिली बेर तहरा के कवनो अशोभनीय रूप में मत देखि पावे। तबे उनुकर मन प्रसन्न होई।' कहत कृष्ण तीर नियर चलि गइलन। दुर्योधन के मन में सहसा भासि गइल कि आजु पहिली बेर ई कृष्ण उनुका के सही राय देले बाड़न। नाहीं त, आजु तऽ अनर्थ होइ जाइत। कृष्ण के मन ही मन धन्यवाद देत ऊ परिधान कक्ष में जाइ के फूल के झालर से अधो अंग तोपि के शेष अंग से अनावृत होके माता गांधारी के आगा खड़ा हो गइलन।

गांधारी दुर्योधन के आहट पहिचान के वात्सल्य भरल मधुर स्वर में पुछली, "बेटा! हम जइसे कहले रहनी ओही रूप में आइल बाड़ऽ नू?

दुर्योधन प्रसन्न स्वर में, "हँ" कहलन! गांधारी दुर्योधन से कहली "बेटा! दरवाजा के बन्द कइ के हमरा सोझा खड़ा हो जा। हम जइसहीं आँखि खोलबि, मंत्र पढ़ब तू अपना भीतर एगो विशेष शक्ति-प्रवाह के अनुभव करबऽ। एसे विचलित जनि होइहऽ। मन एह घरी निर्मल आ द्वेष रहित रखिहऽ।"

दुर्योधन के रोम-रोम जागृत हो गइल ! माता गांधारी के हाथ धीरे-धीरे अपना पट्टी के गिरह खोलत रहल आ दुर्योधन के बुझाउ कि ओकर रक्त प्रवाह तेज होत जात रहे। जइसहीं गांधारी लगहीं धइल सोने के तिपाई पर आपन पट्टी खोलि के धइली दुर्योधन के अंग-प्रत्यंग झनझना गइल रहे। बुझाइल कि गांधारी के बन्द पलक के नीचे से ज्योति के राशि-राशि किरण निकल के पूरा कक्ष में पसरे लागल। इहाँ तक कि मणिदीप के प्रकाश मद्धिम पड़ि गइल। गांधारी आपन दूनु करतल से पहिले धरती के स्पर्श कइली फेरु धीरे-धीरे अपना दूनु हाथ के आपुस में रगड़ के दूनु आँखि से दू बेर छुआ लिहली। फेरु गँवे से हाथ हटा के पद्मासन मुद्रा में अइली। उनुका आँखि के पपनी हिलल आ दुर्योधन के दूनु उपानह रहित गोड़ के नोह जइसे सनसना गइल। धीरे-धीरे जइसे-जइसे आँखि खुलत गइल दुर्योधन के नख से शक्ति के लहर ऊपर चढ़े लागल। दुर्योधन के बुझाइल कि आँखि ओह प्रकाश के सहे में असमर्थ होत जातिया। तऽले गांधारी के दृष्टि जइसे जाँघ के लगे आइ के ठमकल आ ऊ एकदम से उनुका कटि से ऊपर दउरत, सिर के छुअत फेरु आँखि पर केन्द्रित हो गइल। गांधारी के ओह आँखि में आतुरता, चिन्ता, दुःख, आश्चर्य (अचरज) के अइसन मीलित भाव रहे कि ओह अभूतपूर्व क्षणों में दुर्योधन सहम गइलन! गांधारी के मुँह से अनासे कुछ शब्द फूटल, "अरे! ई का?" दुर्योधन हम तऽ तहरा के शिशुवत् आवे के कहले रहनी। एह पुष्पाभरण के सज्जा में आवे के त संकेत कतो ना रहल? तू हमार बात काहें ना मनल? ना बुझाइल रहल त पूछि लिहितऽ?" उनुका मुँह से एगो ठंडा साँस निकल गइल। कहली कि, "भावी के केहू ना रोकि सके। आजु जहाँ-

जहाँ हमार दृष्टि परल तहार ओतना शरीर वज्र नियर हो गइल। कवनो अस्त्र-शस्त्र के प्रभाव ओकरा पर ना पड़ी। बाकिर कटि से नीचे के भाग जानु तक कमजोर रहि गइल। ओहिजा आघात भइला पर बाँचल कठिन बा?" दुर्योधन के आँखि छलछला गइल, मुँह झँवा गइल। ऊ भीतर से आवेवाला एगो रोआई के लहर बड़ा कठिनता से रोके के प्रयास कइलन। उनुकर नासिका फूले लागल, ओठ फरके लागल। रोकलो पर आँखि से लोर ढरकि गइल। गांधारी तऽले आपन पट्टी उठावे लगली फेरु से आँखि पर बान्हे खातिर। गांधारी के आँखि एक बेर-फेर लोर में भीजल दुर्योधन के मुँह पर परल! उनका आँखि में अतना वात्सल्य, अतना पिआस भरल रहल कि ओकरा खातिर कवनो शब्द ना जोहल जा सके। बाकिर अइसन मर्मन्तिक दुःख के तापो घहराइ गइल कि दुर्योधन के मुँह से निःश्वास निकल गइल। गांधारी के लगे जाए के साहस ना भइल ना अपना अधो पुष्पावरण के गिरा देबे के दुःसाहस ऊ बटोर पवले। गांधारी के आहत दृष्टि एक बेर-फेरु ओह विन्दु पर जाइ के ठहर गइल जइसे कतो से कवनो संघ पाके जतना लउको कुल्ही के वज्र बना देसु। अब ले दुर्योधन के देह ओह ज्योति से जइसे तपे लागल रहे, गांधारी एह स्थिति के अनुभव कइली आ आपन पट्टी आँखि से लगावे लगली। साथ ही पुछली कि "दुर्योधन महतारी के दृष्टि में आपन संतान सदा बालक रहेले। हम तऽ कबो तहनी लोग के शिशु अवस्था में ना देखनी खाली हाथ के स्पर्श से आपन पूरा नेह-छोह देबे के चहनी। आजु बुला ममता के वशीभूत होके अपना तप के प्रसाद रूप में एगो आग्रही भाव राखि के तहरा शरीर के अक्षत राखे के लालसा उभरल रहे। कवन महतारी ना चाही कि ओकर संतान सुरक्षित रहो? बाकिर हम एह में सफल ना हो पवनी। अच्छा! एगो बात बताव कि हमरा लगे आवे के समय तहरा के केहू देखल त नाऽ?"

अब तक गांधारी पट्टी में एगो गिरह लगा चुकल रहली। उनुका आँखि से झरत प्रकाश के ताप धीरे-धीरे सम पर आवे लागल रहे। अपना अज्ञानी रूप के अनुभव करत अपराधी भाव से भरल दुर्योधन कहलन, "ना। अवरु केहू त ना बाकिर कृष्ण अंतःपुर के पहिल द्वार पर भेंटाइल रहले।"

गांधारी चिहूँकि गइली, उनुका लिलार पर चिन्ता के रेखा खिंचा गइल, मुँह तमतमा गइल। ऊ कहली, "अरे! दुर्योधन! ई बाति हमरा लगे आवते काहें ना बतवलऽ? कृष्ण आपन खेल खेलि गइलन! उनुका से खाली देखे-देखी भइल कि कवनो बातो भइल?"

दुर्योधन कृष्ण के संगे भइल वार्तालाप के दोहरा गइल साथे ईहो बता गइल कि ऊ कहलन कि पतिव्रता स्त्री खातिर अपना पति के अलावा सभे पर पुरुष हऽ। बेटा भइलो पर आजु तू पूर्ण पुरुष रूप पा लेले बाड़ एसे मर्यादिते रूप में सोझा

जइहऽ, ना तऽ कोपभाजन होखे के परी। पहिली बेर आँखि खोलते अशोभन कुछ ना होखे के चाहीं।"

गांधारी के मन में अचके पूरा घटना आ ओकर परिणाम घूमि गइल। ऊ कहली, "देखऽ दुर्योधन, कृष्ण आपन काम कइ गइले। तहार तनिकी भर असावधानी आ निरर्थक गर्व हमरा कुल्ही प्रयास पर पानी डालि गइल। जीवन भर के हमार साधना मोह के चलते पराजित त होइए गइल, कृष्ण के सजगता के चलते ठगाइ गइल। हम आँखि रहत ओकरा शक्ति के प्रयोग ना कइनी, तू आँखि खोलियो के स्थिति ना देखि पवल।"

ऊ एगो ठंडा साँस लिहली। कृष्ण के प्रति हाय! निकलि गइल। गांधारी दुर्योधन से कहली कि, "तू एने से अब सदा जागत रहिहऽ। अवरू दोसर अब कुछ सम्भव नइखे। हमरा भीम के प्रतिज्ञा नइखे भुलात।" कहि के गांधारी चुप हो गइली। नियति के जान सकेला?

दुर्योधन उदास अपना भवन में लवटि आइल। आजु गांधारी के युद्ध भूमि में सहारा लेके आवत आ जगह-जगह ठोकर खात रूप देखि के दुर्योधन पहिलहीं अइसन फेर दुःख से भरि गइल। सोचे लागल कि जवना महतारी के पिता, कुल, राज्य आ संतान के आँखि बनि के रहे के चाहत रहल जब ऊ महतारिये अपना आँखि पर अन्हार के पट्टी बान्हि लिहली तऽ ओह राज परिवार के कल्याण कइसे सम्भव हो सकेला? अनचाहते आँखि से लोर बहि चलल।

अब ले गांधारी दुर्योधन के लगे चहुँप के उनुकर सिर अपना जाँघि पर धऽ लेले रहली। महतारी के हाथ दुर्योधन के मुँह पर, छाती पर फिरत रहे, जइसे ऊ कुल्ही घाव के पीर अपना हाथ से खींचि लीहें। आँखि से टप्-टप् मोती नियर लोर ढरकत रहे। दुर्योधनो के आँखि से दूनो ओर लोर के धार ढरत रहे आ ओही लोरिआइल आँखि से ऊ लगातार अपना तपस्विनी महतारी के एक टक देखत रहले। उनुका अपना महतारी के अँजोर भरल, अँजोर झरत आँखि आ दृष्टि मन पऽरत रहे जवना के ऊ पहिली बेर खुलल देखले रहले। नील कमल नियर आँखि जइसे सूरज के असीमित प्रकाश से भरि के जगमगात रहल। कतना दीप्ति, आत्मविश्वास भरल ऊ आँखि रहे। बाकिर कइसन त्वरित अविवेकी निर्णय के पट्टी बान्हि के सम्पूर्ण परिवार आ आत्मीयजन के अन्हार में डुबा देवे वाली?

एह चिन्तन के तार बुला गांधारियो के मन के कहीं से छू दिहलस। ऊ कहली - "पति के अनुगता त बननी बाकिर आगा के भविष्य काहें ना देखि पवनी? ऊ कइसन भाव के लहर रहल कि पति के अन्हार के अँजोर में ना बदलि के हम आँखि रहत आन्हर बनि गइनी। कतना गिरह, अभाव के पीर, असुरक्षा के भाव के दंश तहनी लोगन के तड़पवले होई जेकर परिणाम आजु हमरा सोझा वंश के

विनाश रूप में घटित भइल। तहनी लोग के निरंकुशता जीवन हानि के रूप में हमरा सहे के परता।"

गांधारी का मुँह से अचानक एगो चीख निकलल। उनुकर सबसे बड़, पहिला, शक्तिशाली महारथी प्रिय बेटा उनुके कोरा में शीश धड़ के निःशब्द हो गइल! ओकरा आँखि के पियास, विवशता के भाषा आँखि रहत गांधारी ना देखि पवली। आपन ई नियति अपने रचे वाली गांधारी आजु जतना विवश अशक्त आ पीड़ित भइली ओकर साक्षी ऊ स्वयं रहली। राति अवरू गहराई गइल, पंछी अपना बसेरा पर थाकि के लवटि गइलन स।

महारानी के ले जाए खातिर प्रकाश दंड लेके सैनिक आ गइलन स। दुर्योधन के विधवा रानियन के करुण रुदन से गांधारी के रोआँ-रोआँ रो उठल। उनुकर आपन हिचकी उनुकर देहि थरथरा दिहलस। बुझाइल जे पूरा देह सुन्न हो गइल आजु उनुकर मन ई ना बूझि पवलस कि ई उनुकर कवन धर्म भइल। पति प्रेम आ कि पुत्र प्रेम आ कि राष्ट्र-प्रेम?

संपर्क : 142, बाघम्बरी गृहयोजना, भरद्वाजपुरम, प्रयागराज-211006 (उ.प्र.)

श्रद्धांजलि

एह अंतराल में देखते देखत हमनी का भोजपुरी साहित्य परिवार से
कई गो विभूति हमनी के अपना करम पर छोड़िके धरती से विदा
हो गइली-

अरुणेश नीरन

रामाज्ञा प्रसाद विकल

तैयब हुसैन पीड़ित

गंगा प्रसाद अरुण

अतुल मोहन प्रसाद

शोकसंतप्त सँझवत परिवार का ओरि से
सादर नमन आ विनम्र श्रद्धांजलि।

जीवन एक वनवास रे भइया



राम अचल पटेल

कहाँ ठौर बा, कहाँ ठिकाना
कब, केकरा आ कइसे जाना
केहू के ना आभास रे भइया
जीवन एक वनवास रे भइया।

कुरुक्षेत्र हऽ दुनिया सारी
छिड़ल बा जहँवा मारा-मारी
लेवे पड़ी समर में लोहा
कर के रख सदा तैयारी
तब तक तोहके लड़े के बाटे
जब ले तन में साँस रे भइया।

अवगुण आ गुणवान भी इहवाँ
निर्धन आ धनवान भी इहवाँ
छल-बल सत्य-असत्य का साथे
धरम करम सम्मान भी इहवाँ
खुद से खुद के इहाँ लड़ाई
खुद पे रख विश्वास रे भइया।

आइल बा जे, जाना तय बा
छूटी माल खजाना तय बा
माटी के ई देंह एक दिन
माटी में मिल जाना तय बा
मायानगरी अबो केहूँ के
आइल ना बा रास रे भइया।

लघुकथा

समस्या समानांतर के



विद्या शंकर विद्यार्थी

"दरोगा जी, हमार सेयान बेटी
स्कूल जात बिया त गाँव के कुछ लोग
राह में छेड़खानी करे लागता, हम बेटी
स्कूल भेजीं कि पहरा करीं, केस लिहीं,
सरकार।" धनेसरा हाथ जोरत
कहलस।

"आपन घोड़ी बान्ह धनेसरा आपन
घोड़ी, घोड़ा त छूटा रहे ओला जीव
होलन। का बुझले?" दरोगा जी एतना
कहत ही ही ही ही हँसे लगलन। ई त
गरीब आदमी का ऊपर गंभीर चोट रहे
आ उपहास।

"दरोगा जी, टांगी में लकड़ी
लेखा रउआ उहन लोग के सह देत
बानी, एह से कि हम अदना आदमी
हई।" एतना कहत सिर नेवइले धनेसरा
चल दिहलस कि ई रक्षक ना बलुक
भक्षक ह।

अगिला दिन दरोगा जी के
बेटी के ओढ़नी ओह मनबटू लोगन का
हाथ में मोटर साइकिल पर उड़े
लागल। लोग कहे लागल कि सबकर
जिंदगी समानांतर के होला आ समस्या
भी।

रिश्ता

मनोकामना सिंह 'अजय'



अभी हमनी के मिनी परिवार के युग में जी रहल बानीं जा। मिनी परिवार के मतलब पापा मम्मी आ उनकर जामल बाल बच्चा। ई असहीं बा जइसे डायनिंग हॉल में टेबल पर राखल कवनो फलदार बोनसाई गाछ, जेह में लटकल पाँच-सात गो कवनो फल। मिनी परिवार के लोगन खातिर बाप, चाचा, मामा, फूफा, भाई, भतीजा... माई, चाची, मामी, फूआ, बहिन, भतीजी त अइसन बुझाला जइसे सूप से फटकाइल भुइयाँ पर गिरल फटकन।

बाकिर आज से पचास बरिस पहिले ई लोग सूप के फटकन ना रहे। ई लोग रहे बगइचा में लागल कवनो छतनार फलदार फेंड़ जेकर छाँह आ फल पर सबकर बरोबर के हक होत रहे। ई लोग डायनिंग हॉल में राखल कवनो बोनसाई गाछ ना रहन जा, जे तनी सा धक्का लगला पर ढिमला के फर्श पर गिर के तुड़-मुड़ जास। ई लोग के सोर धरती के नीचे अतना गहिरा रहे कि कतने आँधी-पानी में जस के तस खड़ा रहत रहन जा। ई भूमिका के पाछा बरिसन पहिले के एगो कहानी बा। राम सागर उनकर मेहरारू पारबती आ उनकर चचेरा भाई कमेसर, जे एके शहर में रहत रहलें जा। रामसागर आ कमेसर एके कारखाना में काम करत रहलें जा बाकिर अलग-अलग थोड़की दूरी पर रहत रहलें जा।

एक दिन कमेसर अपना भाई-भउजाई से मिले उनकर क्वार्टर पर गइलें। रामसागर कमेसर से कहलें- "का हो कमेसर, हम सुनलीं हँ कि तहार मयभा महतारी दशरथ चा के सब पेंशन के रोपया त ले लेवेलीं। अपने त अछा खात-पीअत बाड़ी, अछा कपड़ा पहिरेली बाकिर दसरथ चा के ना त समय से खाए-पीए के देवेली, ना साफ कपड़ो पहिरे ला देवेली। तूँ अइसन महतारी के मार के मुँआ काहे नइखत देत ?"

ई बात रामसागर के मेहरारू पारबती सूनत रहली। ऊ कहली- "रउआँ अछा सिखा रहल बानी कमेसर बबुआ के, ई महतारी के मार के जेहल चल जास। इनकर शादी-बिआह जन होखो।दसरथ बाबूजी के बंस ओरा जाव। अइसन काहे नइखीं करत रउरे चाची के मार के जेहल चल जाई। राउर बंस चलावे खातिर त चार गो लाल बाड़न सँ नूँ।"

ई कहाला खून के असल रिश्ता, जे खाली अपने खातिर ना आपन बंस खातिरो सही सोचे। आमतौर पर कवनो मेहरारू अपना मरद खातिर उरेव कहेवाला के मुँह नोच लेवे के तइयार हो जाले। ऊ अपना मरद खातिर अइसन बात अपने मुँहे कइसे बोल गइली ? ई बात सुन के रामसागर आ कमेसर के लागल कि केहू बिजुरी के करंट छुआ देले होखे।

संपर्क : जमशेदपुर। मोबाइल- 8809694466

घुरवा के माई

बीरेंद्र पाण्डेय

पात्र-परिचय

- 1-घुरवा के माई- मनराखन के मेहरारू अउरू घुरवा के माई। भूत-प्रेत में विश्वास करे वाली औरत।
- 2-मनराखन- घुरवा के बाप। एगो गरीब किसान।
- 3-घुरवा- आठ-दस साल के लइका। पढ़े के मन बा लेकिन माई पढ़ावत नइखे।
- 4-अकुला फुआ- गाँव-घर के मैसैजर।

पहिल दृश्य

(मनराखन बो सुबह के खाना बनावे का तैयारी में लागल बाड़ी। घुरवा बइठ के चबेनी फाँकत बा। ओही समय अकुला फुआ आ जात बाड़ी। मनराखन बो सोहर के गोड़ लगली आ बइठे के पीढ़ा दिहली।)

मनराखन बो- (पैर पर आँचर रख के) गोड़ लागत बानी ए फुआ।

अकुला फुआ- माडी-कोंखी जुड़ाइल रह ए बाची।

मनराखन बो- गाँव-घर के का हाल बा ए फुआ?

अकुला फुआ- (मुँह चुनिया के) का कहीं ए बाची! अब गाँव-घर में रहल मुसकिल हो गइल बा।

मनराखन बो- (चिहा के) का भइल बा ए फुआ?

अकुला फुआ- टोला-मुहल्ला में डाइन-भूतिन के राज हो गइल बा।

मनराखन बो- (चिहुँक के) हनू!

अकुला फुआ- आज टहलुआ बो भूत खेलावत रहे आ काल्ह मंगरुआ बो के किचिन पकड़ले रहे।

मनराखन बो- आहि ए दादा! अब का होई?

अकुला फुआ- सुननी हाँ कि रात में गली में भूत घूमत बाड़न स। सब दसई में छिछियाइल चलत बाड़न स।

मनराखन बो- सुन के त रोआँ खाड़ हो गइल ए फुआ। अब का होई?

अकुला फुआ - होई का? आपन-आपन माड कोंख बचा के रहे के बा। सुननी हाँ कि तीनों अंजानो सती का दरबार में गइल बाड़ी सन। ओहिजा के बाभाना सती देई के खेलावेला।

मनराखन बो- (घुरवा से) सुनत बाड़े नूँ बबुआ! केवनो के घरे जइहे मत। कुछ

दीह सन त खइहे मत, ना त मडधोवनी कुछ पेश दिह सन ।
घुरवा- ए माई! भूत-ब्रह्म कइसे खेलावल जाला, इ कइसन खेल ह? हमहूँ
खेलाइब ।

मनराखन बो- भगले कि ना । तोर मुँह लुआठिए से दाग देब ।
अकुला फुआ- दसई आइल बा । एह घरी भूत दउरल चलत बाड़न स । एह
लइका के बचा के रखिह । बड़ा खुरचालू बा ।
मनराखन बो- का कहीं ए फुआ! ई दूनो बाप-बेटा नाकिन चाना चबवा देले
बाड़न स । कहूँ के दिहल चाट लिह सन ।

घुरवा- हम जात बानी भूत खेलावे । (प्रस्थान)
मनराखन बो- ए फुआ! हमहूँ सती देई के चुनरी भखले बानी ।
अकुला फुआ- आह ए बाची! दसई आइल बा । जल्दी चढाव ना त सती देई
कोप हो जइहन । लेना के देना पड़ जाई ।

मनराखन बो- ठीक कहत बानी ए फुआ! कइ दिन चुनरी ले आवे के कहनी
लेकिन ई मरद कान बहिर आ पीठ गहिर कइले बा । आज उनकर एको नतीजा
ना छोड़ब ।

अकुला फुआ- ठीक बा ए बाची! जल्दी भारा उतार द । आच्छा, अब हम चलत
बानी ।

मनराखन बो- ठीक बा । गोड़ लागत बानी ।
(फुआ के प्रस्थान । परदा भी गिरत बा ।)

दोसर दृश्य

(घुरवा रोवत-रोवत घरे आइल बा । रोवला से ओकर लोर आ नाक के नेटा एक
भइल बा । घुरवा के माई आडन बहारत बिया । अचके में ओकर नजर घुरवा पर
परल बा ।)

मनराखन बो- काहें रे घुरवा! तोरा का भइल बा? तू काहें रोवत बाड़े?

(घुरवा माई के दुलार पा के अउर भोकार पारे लागल बा ।)

मनराखन बो- (बाँह पकड़ के) बोल ना रे! तोरा का भइल बा? तू कहाँ गइल
रहस? केवनो के नजर लाग गइल का?

घुरवा- एह टोला के लइका हमरा के अपना साथे खेलावत नइखन, चिढ़ावत
बाड़न । कहत बाड़न कि तोर नाम घुरवा ह । तू घूरा पर के फेंकल हवे ।

मनराखन बो- तें ओह लोगन का पास काहें चल गइले? ऊ लोग धनी-मानी के
लइका हवन ।

घुरवा- तू हमार नाम घुरवा काहें रख देलू?

मनराखन बो- का कहीं ए बबुआ! तू मराछ हव । जिये खातिर तहार नाम घुरवा रख देनी ।

घुरवा- मराछ का होला ए माई!

मनराखन बो- हमार एको बाल बाचा जियत ना रह स । भतरखौकी डाइन चबा जात रही सन । अकुला फुआ टोटरम बतवली कि बाचा जनमते चुपके से घूरा पर रख दिह ।

घुरवा- तब का भइल ए माई!

मनराखन बो- जब तहार जनम भइल तब तहरा के घूरा पर रख देनी , आ तहार नाम घुरवा रख देनी । जिए खातिर ए बबुआ! तूहीं एगो आँख के पुतरी बाँचल बाड़ ।

घुरवा- ए माई! हमरा के असलेट कीन दे । हमहूँ पढ़े जाइब ।

मनराखन बो- ना बबुआ! तू पढ़ ना सकेल ।

घुरवा- काहें माई?

मनराखन बो- तहार बाबू किसान हवन, एको अक्षर ना पढ़लन । तू कइसे पढ़ब ए बबुआ!

घुरवा- किसान-मजदूर के लइका के ना पढ़े के चाहीं?

मनराखन बो- सुनीना कि तहरा घरे पढ़ाई ना सहे ।

घुरवा- काहें ना सहे ए माई?

मनराखन बो- जब तहरा दादा के असलेट किनाइल त तहार परदादा मर गइलन । जब तहरा बाबू के असलेट किनाइल त तहार दादा मर गइलन । एह से हम तहरा के असलेट ना कीनब ए बबुआ!

घुरवा- (चिहा के) असलेट किनइला से कोई कइसे मरी रे माई? जरूर ओह लोग के केवनो रोग भइल होई ।

मनराखन बो- पढ़ाई के नाम से हमार करेजा धक्-धक् करेला । जान बा त जहान बा, ए बाबू ।

हम तहरा के ना पढ़ाइब ।

घुरवा- (खखन के) हम पढ़ब ए माई! कहू के कुछ ना होई ।

मनराखन बो- (डाँट के) चुप रह । अंडा सिखावे बाचा के कि चेंह-चेंह कर । जान से बढ़ के पढ़ाइए बा? जियबे त नरेगा में काम करबे नूँ । दूगो भइस चरइबे त दूध मिली नूँ ।

घुरवा- हम नरेगा में ना जाइब । हम भइस ना चराइब । हम पढ़बे करब । असलेट कीन दे ।

(हाथ-पैर पटक के रोवत बा ।)

मनराखन बो- हई देख, एकर ढिठाइल! (झाड़ू देखा के) हई देखत बाड़े नूँ, तोर सब भूत झार देब। आज के बाद कभी अइसन अशुभ बात बोलबे त तोरा जीभी पर काग-कउआ लिख देब।

घुरवा- (जीभ बिरा के) हूँह! बड़ा चलल बाड़ी काग-कउआ लिखे। पढ़बू ना त लिखबू कइसे?

मनराखन बो- (दू झाड़ू मार के) धर त रे ! एकर मूड़ी ममोर दीं।

घुरवा- (भागत बा) झाड़ुए से काग-कउआ लिखबू?

मनराखन बो- हई देख रे! तू ठहर, तोरा के पढ़ावत बानी।

(झाड़ू लेके पिठियवले बिया। घुरवा मुँह बिरावत भागत बा।)

घुरवा- हम पढ़बे करब...पढ़बे करब (कहते भागल बा। ओकर माई खदेड़ले बिया।)

तीसरा दृश्य

(मनराखन दलानी में बइठल बाड़न। गाली पर हाथ रख के कुछ सोचत बाड़े। ओही समय उनकर मेहरारू आ गइल।)

मनराखन बो- का जी! गाली पर हाथ देके का सोचत बानी? रउरा केवनो काम धंधा नइखे का?

मनराखन- केवन काम बा, कह?

मनराखन बो- काम केवन बा। बइठ के खाटी तूरीं। ई नइखे बुझात कि दसई आइल बा।

मनराखन- दसई आइल बा, त हम का करीं? ओकरा से लड़ीं?

मनराखन बो- एह मरद से हम तबाह बानी। कुछ यादे ना रहे।

मनराखन- तहरा केवल आपन बात याद रहेला। हमरा नून, तेल, बीया-बाल, खेती-बाड़ी, गाय-भइस सब याद रखे के बा। का कहत बाड़ू, कह।

मनराखन बो- दशहरा आइल बा। दशहरा में दसो दुआर खुला रहेला। रउरा खाँसी भइल रहे त अंजानो सती के चुनरी भखले रही। रउआँ भुला गइनी? चुनरी ले आई। चढ़ावे के बा।

मनराखन- का ड्रामा कइले बाड़ू? चुनरी चढ़वला से खाँसी ठीक होला?

मनराखन बो- (खिसिया के) राउर त धरमे-करम नाश हो गइल बा। देवी-देवता में बिसवासे नइखे। एही से भोगत बानी। हमरे करतब से दूगो बालो-बाचा लउकत बा, ना त बाँड़े-ढूँठ बन के रहतीं।

मनराखन- (नरमा के) का अटोमेटिक मशीन अस चालू हो गइलू? बताव, कइसन चुनरी चाहीं?

मनराखन बो- एकदम लाल, टुहू-टुहू, चकचक, झकास। समझनी।
मनराखन- (कपार पकड़ के) तहरा चुनरी के रंग सुन के त दिमाग फुलहा
कटोरा अइसन झनझना गइल। ई रंग कहाँ मिली?
मनराखन बो- जहाँ से मन करे, उहवाँ से लाई। हमरो एगो साड़ी चाहीं।
मनराखन- पइसा कहाँ से आई?
मनराखन बो- हमरा खातिर आग लाग जाला। जब ले एह घर में अइनी, ई मरद
एगो लुगरी ना किनले होई। आज साड़ी ना आई त घर में लंका-दहन हो जाई।
(ओही समय घुरवा असलेट लेले आ गइल।)
मनराखन बो- (घुरवा के असलेट देख के) आही दादा! ई असलेट कहाँ से ले
आइल?
मनराखन --हम पइसा देनी हँ।
मनराखन बो- एकरा खातिर पइसा हो गइल आ हमरा खातिर आग लाग जाला।
एह बेर एकर असलेट फोड़ब।
(असलेट छीने खातिर घुरवा के खदेड़ले बिया। घुरवा भाग जात बा। पीछे-पीछे
घुरवा के माई भी।)
मनराखन- (अपने आप) ई मनराखन, केकर-केकर मन राखस। दशहरा,
दिवाली, छठ, गोधन- सब कपार पर चढ़ल बा। ई देवी-देवता भी कुदिने
आवेलन। कोई दुख ना बूझे। सब जानत बा कि मनराखन चानी कटत बाड़न।
चलऽ ए मनराखन।
(धीरे-धीरे मनराखन के प्रस्थान)

संपर्क : ग्राम- भटौली, पोस्ट- भटौली, थाना- नावानगर, जिला- बक्सर (बिहार) पिन-802129
मोबाइल : 9939477087 ईमेल : pandeyvirendr 91@gmail.com



किसिम-किसिम के फूल : एगो नया काव्य-दृष्टि

कृष्ण कुमार

श्रीभगवान पाण्डेय 'निरास' के 'किसिम-किसिम के फूल' के 'गुरु वंदना' से ले ले 'चलते-चलते' तक माने उनहत्तर वंदना, गीत आ गजलन में गोता लगवला के बाद हमरा अइसन बुझात बा कि कवि के जिनगी टीस आ व्यथा से लबरेज बा। उहाँ लगे कहे के ढेर बा बाकिर नइखीं कह पावत। एहिजा लातिन अमेरिकी कवि निकानोर पर्रा के कहल एगो बात हमरा इयाद आवत बा, जे अपना पाठक लोगन से कहले रहीं कि हमरा किताब के जरा दिह लोग। निकोबार पर्रा के ऐंटी पोएट धारा के अगुआ कहल गइल बा। उहाँ के अपना एगो महान कृति के अपना पाठक लोगन ओह किताब के जरावे के आग्रह कइले बानी। उहाँ के मानत रहीं उहाँ के कविता उहाँ के भीतरी चले वाला लहरन के नुमाइंदी नइखे करत। आ अंत में उहाँ के ई कहनी कि आज तक जवन कहनी-लिखनी ऊ सभ हम वापस ले तानी। श्रीभगवान पाण्डेय 'निरास' के कर्म क्षेत्र से लेले साहित्य तक जवन हम उहाँ के बारे में अब ले अनुभव कइले बानी ओह में 'निरास' जी के हम निकोबार पार्रा के विचार धारा से मिलत-जुलत पवले बानी। जीवन आ समाज खातिर उहाँ के करेजा में आग हमेशा तलफत रहेला।

निरास जी के 'किसिम-किसिम के फूल' के पढ़ल हमरा खातिर एगो बड़ दुर्लभ अनुभव रहल। अपना सहयात्री कवि के कृति पर सहयात्री कथाकार के प्रतिक्रिया कबहुं आलोचनात्मक सिद्धान्तन आ मापदण्डन पर आधारित ना होला। ऊ हमेशा रचनाकार के निजी आग्रहन आ प्रवृत्तियन से प्रेरित होला।

लाख शब्दन से बिनाइल एगो कहानी बजाय कबो-कबो सइ शब्दन के एगो कविता अधिका होला। हालाँकि जीवन के अनुभव, उतार-चढ़ाव के कविता में व्यक्त कर पावल आसान त नइखे, बाकिर 'निरास जी' एकरा के संभव क के देखवले बानी अपना पहिला काव्य संग्रह 'किसिम-किसिम के फूल' में।

अबहीं तक के जीवन जातरा में उहाँ के कवना-कवना तरह के समस्यान से लोहा गहले बानी बाकिर समस्यान के सोझा के कबो झुकल नइखीं। अपने आप में ढेर सारा सकारात्मक परिवर्तन ले अइनी आ सशक्त बन के ओहनीन से मुठभेड़ कइनी। एह सभ बातन के उहाँ के अलगा-अलगा गीत आ गजलन के माध्यम से बतवले बानी।

ई कइसन आधुनिकता के दौर आइल कि जवना में सभ संवेदना गुम होत जा रहल बा। एह निहठुर आ आतताई समय में साँच के बार-बार सलीब पर लटकावे के ताबड़तोड़ कोशिश हो रहल बा। अइसन अकरावन आ दमघौंठू समय में निरास जी के काव्य-संग्रह एगो उमेद के अँजोरिया निअन लागत बा। आज के समय मे जहाँ रिस्ता-नाता के अहमियत आ तासीर खतम हो रहल बा, ओहिजा साहित्य से कविता के लोप होखल स्वाभाविक ही बा। उहो भोजपुरी में। लिखला के बाद छपवावल। माटी ढोवला से कड़ेर काम। कतना पहलवान कलम उठा के ध देलें। ई बुड़बकाही काहें खातिर ? बाकिर कहाब हऽ "शान-बलिदान मातृभाषा खातिर नाहीं त नाम मत लिह ओइसन नमकहराम के"। माई आ मातृभाषा ई दूनो जीवन के अमूल्य रतन ह। एह दूनों के छोड़ देनी, त सभ छोड़ देनी। अइसन विकट समय में निरास जी के काव्य संग्रह 'किसिम-किसिम के फूल' ले के आइल आश्चर्य के साथे सुकून भी देता। इहाँ के कंठ के मधुरता आ शब्दन के सटीक प्रयोग के हम अंदाजन पचास बरिस से हिमायती रहल बानी। एह संकलन के ढेर गीत आ गजल देश भर के विभिन्न पत्र-पत्रिकन में प्रकाशित हो चुकल बा।

निरास जी एगो काफी संवेदनशील आ उदारमना कवि हईं, जे अपना गीत आ गजलन में जन जीवन के प्रभावित करे, ओह सभ घटनन के एगो मानवीय रूपक रचले बानी, जवन उहाँ के लउकल बा। काल्पनिक दृश्य विस्तार के जगहा यथार्थ कथा तत्व इहाँ के काव्य में उपस्थित बा। ओज, शौर्य, प्रेम आ सौंदर्य सभ ऊहाँ का गीत गजलन में एक साथे आकार पवले बा। ऊ सभ आंदोलित भी करता आ आह्लादित भी। उत्प्रेरित भी करता आ आश्वस्त भी। कठोरता आ कोमलता दूनो बा। हमरा कहे के लब्बोलुआब ई बा कि कइअक गो काव्य प्रवृत्ति एह किताब में एक साथे विस्तार पावत बाड़ी स। एह से हम निरास जी के द्वंद्वात्मक ऐक्य के कवि मानत बानी। ऊहाँ का गजलन में गद्यात्मकता ना हावी हो के भीतरी स्तर पर एगो लय, एगो धुन आ एगो पूरा संगीत हाजिर बा। काफी संप्रेषणीय आ अर्थगर्भित।

ऊहाँ के गीत-गजल शिल्प, भाषा, मुहाबरा आ दृष्टि के लेके अत्यंत महत्त्वपूर्ण हो गइल बा, जेवना में पाठक लोगन के आपन निजी घर आ पड़ोसिया से संवाद लेखा लागत बा। एह संग्रह में सामाजिक उत्तरदायित्व के बोध, मानवीय संवेदनन के तलास आ आत्मालोचन सहजे लक्षित होता। हालाँकि निरास जी के पहचान उहाँ के बेहद मधुर गीतन का वजह से बा, बाकिर ओकरा से पहिले एह संग्रह के गीत-गजलन के पढ़ि के उहाँ का बहुआयामी व्यक्तित्व के पता चलत बा। किताब में आपन कथ्य 'आपन हारल'

में निरास जी स्पष्ट क देले बानी-
 आजु-काल्ह-परसो-तरसो में,
 बरिसो-बरिस खिंचाइल बा।
 रहे छिटाइल जहवाँ-तहवाँ
 सभे कहाँ बटोराइल बा।
 मिलल जवन आ सँपरल जतना
 भाव जवन छपिटाइल बा
 किसिम-किसिम के फूल समेटले
 उहे रूप ले आइल बा।

निरास जी एह चार पंक्तियन का माध्यम से अपना किताब का प्रकाशन के व्याख्या कइले बानी। साँच कहीं त 'किसिम-किसिम के फूल' निरास जी के एगो छिटाइल छिटिका ह। अबहीं धार बाकी बा। भूमिका के बाद भीतर के पृष्ठन पर कल्पना मिश्रित यथार्थ के लपेटत छोट-बड़ गीत-गजल पाठक लोग के अपना साथे एगो अलग में ले जाता। खड़ा-तिरछा बिंब सहसा अचंभित त करते बा, साथे बिना आभास के पाठक अपना लय में बान्हि के राखता। हर मौसम आ हर तरह के अनुभूतियन से सभ गीत-गजलन के उन्वान 'किसिम-किसिम के फूल' बा। आ एह ट्रीटमेन्ट का वजह से आभास होता कि एगो संवाद चल रहल बा, जवना में पाठक स्वयं के भी जुड़ल पावतारें। एही वजह से एह काव्य संकलन के टाइटिल भी 'किसिम-किसिम के फूल' रखाइल बा।

कहल जाला- बाँहि के भीतरी दबाइल सामान के बिना छोड़ले छत के बल्ली से टँगाइल सामान के पावल असंभव बा। कुछ ओसहीं निरास जी आपन आलस तेआग दिहीं त ऊहाँ के भोजपुरी साहित्य खातिर एगो मील के पत्थर साबित होखबि।

पुस्तक : किसिम-किसिम के फूल'
 लेखक : श्रीभगवान पाण्डेय 'निरास'
 प्रकाशक : नवजागरण प्रकाशन
 ए-3, विकासकुंज एक्स., विकास नगर, उत्तम नगर,
 नई दिल्ली- 110059
 मूल्य : ₹ 200 (पेपरबैक) ₹250 (सजिल्द)
 प्रकाशन वर्ष : नवम्बर 2017 (प्रथम संस्करण)

संपर्क : महावीर स्थान के निकट, करमन टोला,
 आरा- 802301 (बिहार) मो. 9431098005



बात प बात बतकूचन

समीक्षक : कनक किशोर

सौरभ जी एह संकलन में आपन बतकही लोक प केंद्रित कइले बानीं आ पच्चीस गो 'बतकूचन' में बान्हे के प्रयास कइले बानी, एह रंग-बिरंगी लोक के। लोक में विस्तार आ गहराई दूनो होला। क्षितिज के पारो लोक के पहुँच होला। सौरभ जी 'गहरे पानी पैठ' में बिसवास करे वाला जीव हईं। ऊ गहराई इहाँ के बतकूचन में भेंटाता, जब एकरा में डूब के पड़ल जाता।

'बात प बात बतकूचन' में लेखक लोक आ लोक-आस्था से जुड़ल बातन पर बतकूचन कइले बाड़न, जेकर जरूरत लोक से कटल जा रहल मनई आ समाज खातिर आजु का परिवेश में विवेक आ ज्ञान से अधिका बा। इहाँ बतकूचन का बहाने सौरभ जी लोक-वार्ताकार का रूप में हमनीं बीच उपस्थित बानीं- “जवन लोक-समाज में अन्तरिच्छ आ धरतिये ना, एकर कुल्हि अवयव माने जीवन, जल, औषधि, बनस्पती हर कुछ के शांति आ समृद्धि के इच्छा राखत रहे, जवन लोक-समाज सँसे जगती के अवयव के बीचे सहयोग-सुयोग के बात करत रहे, ऊ समाज जइसे लगातार मतिसुन्न भइल जा रहल बा। जवना भूमी के गते-गते परमार्थी, परमहंस, मुनी-ग्यानी लोगन के मौजूदगी रहल बा, ऊ फूटलो भूमी के लोक-समाज सँकेत बिचार आ घनघोर सोआरथ के अन्हार में आन्हर भइल जा रहल बा।”

लोक के इहे चिंता लेखक का बतकूचन खातिर बाध्य करत बा, जेकर प्रतिफल ह 'बात प बात बतकूचन'। बात कइल गइल बा एह संकलन में मातृभाषा के, जात-समाज के, परोजन-बियाह के, गाँव-जवार के, समाजिक खाज के, फगुआ के, रंग के, देश-परदेश के, लोक आ साहित्य के। इहे नूँ लोक के बात ह। संस्कृति के बात ह। देश के आ देश में बसल देस के बात ह। परिवेश के बात ह। हमार, राउर आ लोक के बात ह।

लोकवार्ताकार सौरभ पाण्डेय के 'बात प बात बतकूचन' लोक के अन्हरिये पख नइखे देखत, बलुक अँजोरियो पख सामने रखत बा। भोजपुरिया लोक संस्कृति एगो जियतार लोक संस्कृति रहल बा। ओही संस्कृति के सहारे लेखक देश-दुनिया के, काल्ह आ आजु दूनो पर, जमके बतकही बड़ी गंभीरता से कइले बाड़े। लोक के कवनो बात अछूता नइखे रह गइल। बातो एगो लय में कइल गइल बा जेकरा में प्रवाह बा।

भोजपुरिया समाज के आइना अस बा ई बतकूचन। 'गोजर के हजार गोड़ त भोजपुरिया समाज के लाख, बाकिर कुल्ही गोड़वा लाख दिसा में बढ़त !

सोझ चलहीं के नइखे।' ई लेखक के कहलका समाज का आजु के चरित त कहते बा साथे इहो बता रहल बा, जे इहे कारण समाज के प्रगति बाधित बा।' 'आपन घाँटी आपन दासा' में भोजपुरिया समाज के आजु के यथार्थ के खुल के राखल गइल बा। समहुत में जिए वाला समाज आजु सुआरथि से उपजल सब जहर के पोषक बनल बा आ भोजपुरिया व्यक्ति अपना समाज से कट गइल बा। तबे त लेखक कह रहल बाड़े कि 'रउवा कुछऊ अनेरिया सोचीं, भोजपुरिया समाज के बेवहार में ऊ लउक जाई।' ई भोजपुरिया समाज के अन्हरिया पख ह। समाज के अँजोरियो पख बा। ई समाज अद्भुत जीवट वाला आ सभ हाल में समरस रहेवाला ह। इहे कारण ह कि जहाँ गइल ओहिजा रच बस गइल। आ समय के साथे नियंत्रक हो जाला। भोजपुरी भाषा के आजु जे दुर्दशा बा ओकरो खातिर आपसी फूट जिम्मेवार बा। एह खातिर जगावे के बढ़िया कोशिश करत लेखक नजर आवत बाड़े। लेखक साफ कहले बाड़े कि एकदिस भइला के काम बा। फेरू केहू ना कगरियाई। लोक संस्कृति आ लोक भाषा जिंदा रही तबे समाजो आ मनई जिंदा रही, ई बाति के लेखक बेर-बेर दुहरावत लोक जागरण के बड़ संदेश लेके हमनी बीच खाड़ बाड़े। 'बियहुत' आ 'परोजन' में गँवई संस्कृति आ परंपरा के एह अंदाज में रखल गइल बा कि लागत होखे कि हमहूँ ओह परोजन, घर-आडन के हिस्सा होखीं। भोजपुरिया लोक बेवहार आ पारिवारिक ताना-बाना के सुन्नर प्रस्तुति बा। बाकिर अब ई कहाँ देखे के मिलत बा? समाज में बेयापत दहेज जे एगो कोढ़ के रूप धर लेले बा ओहि के देखत लेखक के सवाल कतना सही बा कि 'त कवना करम के जात-पाँत ? काहे के गोत्र ? कइसन रिस्ता ? कइसन संबंध ? आ कवना करम के आपन कहात ई समाज ?' आधुनिक चलन आ बेवहार के बिना सोचले अपनावे के चलते समाज के इस्थिति 'आधा तीतर, आधा बटेर' देख लेखक के चिंता स्वाभाविक बा। हर विधि के, परंपरा के, परिपाटी के कुछ माने होला, ओह में कुछ रहस्य आ लालित्य छुपल रहेला। बाकिर बड़ा तेजी से बिलाइल जा रहल परंपरा के देख लेखक चुप नइखे रहत। ऊ कह रहल बा, कि लोक आ समाज में परिवर्तन होला। ई कवनो नया बात नइखे। बाकिर ई कवन परिवर्तन ह कि हमनी का ना घरे के रहनी जा ना घाट के।"

आजु हमनी का ओह दउर से गुजर रहल बानी जा कि हमनी का लोकजीवन में अनेक चुनौती एक साथे आ खड़ा भइल बा। समाज में जाति-पाँति, धरम-सांप्रदायिकता, भाषा के दासा, साहित्य के दुर्दशा, देश के बदलत भेष, बाजारवाद आ पूंजीवाद के ठेस जइसन उभरल सवालन के बड़ा गंभीरता से उठावत ठोस आ ठोक ठेठा के बतकही-विमर्श कइल गइल बा संकलन में।

बतकही में आदर्शवाद आ यथार्थवाद के बेजोड़ सम्मिश्रण बा। 'आजु के नीती' में नेता खातिर नीति ना, साहित्यकार पर हावी विचारधारा, 'माई बोली प गनित' में भाषा के नाँव प राजनीति, संस्था के नाम प दुकानदारी, 'समाज के सोरि' में लागत दियका के देखि लेखक समहुत जीवन के टूटत सूत्र आ प्रकृति से दूर जात जनजीवन पर मजगर बतकही कइले बाड़न। बतकूचन के गहराई एह से समझल जा सकेला कि जेपी आंदोलन, नव निर्माण आंदोलन, इमरजेंसी, जनता दल के आइल-गइल, लालू-नीतिश के खेल, शराबबंदी, जेएनयू के राजनीति, फेंकू-जुमला, संघी, गरीबी हटाओ, नोटबंदी, सपना बेचत सत्ता आ नेता, पर्यावरण, साहित्य में गिरावट, धर्म आ पंथ, देश आ राष्ट्र, फगुआ के बिगड़त रूप, चइता के टूटत ताल, गीत आ कविता के भेद, शिक्षा के गिरत अस्तर, देस-गाँव-जवार, खेत-किसान-मजदूर के दासा, 'बदलत चाल' में लोक के परिभाषा, रिसता में कमजोर पड़त लासा, सामाजिक दुर्दशा, पलायन, बिखरत परिवार, ढहत दुआर-घर, लूटत प्रकृति संसाधन, कहे के मानें, जे रउवा दिमाग में बाति आई ओह सब के समेटले बा ई संकलन, एगो लोक पक्षधर बनि के, उहो विस्तार में। कहे के माने, लोकजीवन के सब घटकन आ तात्कालिक समाज के रूप-रेखा के बड़ा बेबाकी आ महीनी से परखे के प्रयास ईमानदारी से लेखक कइले बाड़न उहो सकारात्मक सामाजिक दृष्टि राखि के।

लोकवार्ता का अध्ययन के प्रयोजन आदिमी अउर आदमीयत के प्रतिष्ठा ह। समहुत के प्रतिष्ठा ह। समहुत के जेतना सोपान हो सकेला, ओह सब के समेटले बा संकलन। लोकतंत्र के मजबूत कइल, लोक संस्कृति का अध्ययन के एगो प्रयोजन ह। लोकवार्ता लोकमानस अउर लोकजीवन के जाने के प्रयोजन इहो ह कि देस में शासक आ शासित का जीवन में सम आ ताल के खोजल जा सके। भाषा, धर्म, साहित्य, संस्कृति, कला, समाज अउर मानव-इतिहास में सामान्य मनई का भूमिका के समझल लोकवार्ता के प्रयोजन ह। एह सब के गहिर प्रयास करत लेखक के एह संकलन में देखल जा सकेला। एह प्रयास के फलाफल के बड़ा फरिया के पाठक के सामने राखल गइल बा, जे पाठको के सोचे-समझे के विवश कर रहल बा।

'बात प बात बतकूचन' में बतकूचन गाँव के बतिआवे के गाँवई शैली में कइल गइल बा। बतकूचन का बतकही में एगो लय बा, जे बतकही के काव्यमय बना देले बा। गाँभीरो बाति प बतकही बड़ी प्रामाणिक ढंग से कइल लेखक का प्रौढ़ता आ विषय पर मजबूत पकड़ के बखान कर रहल बा। बतकूचन का प्रस्तुति में लोक आ संस्कृति का रस के बहाव बा, जे पाठक के जोड़ले रहत बा अपना बहाव सड़े। संकलन का आलेखन में शब्दन के भोजपुरियाइन बनावे भा

बात करे का शैली में परोसे के चक्कर तनिका पच नइखे पावत। भोजपुरी समाज के शब्द में कहब त अइसन लागत बा जे जानि बूझ के चोन्हाइ के राखल गइल होखे। लेखक खुद एक जगह कह रहल बाड़े कि व्यक्तिगत नीमन-बाउर मनला से साहित्य ना सधाय।

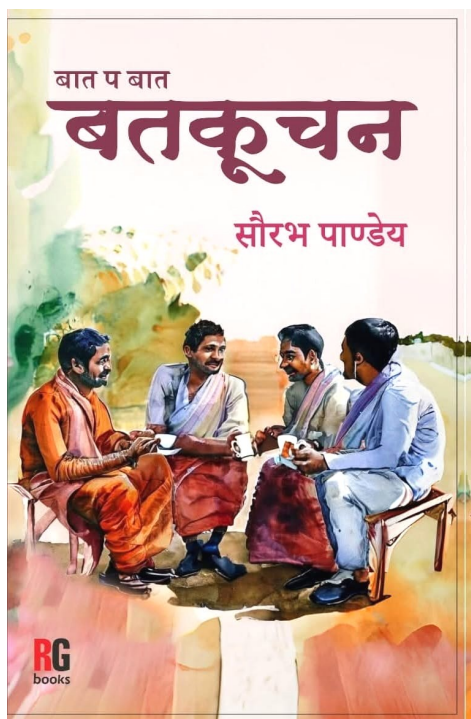
एह संग्रह में संकलित आलेख लेखक का भाषाई संवेदनशीलता अउर सामाजिक सरोकार के गवाही दे रहल बाड़े स। एगो पठनीय सुन्नर किताब 'बात प बात बतकूचन' अपना विशेष स्वाद, विविधता आ गँवई अंदाज खातिर भोजपुरी साहित्य में इयाद कइल जाई आ पाठक हाथे-हाथ एह संकलन के लीहें, ई बिसवास के साथ कहल जा सकेला।

किताब के नाम : बात प बात बतकूचन

लेखक : सौरभ पाण्डेय

पृष्ठ संख्या : 210

मूल्य : रुपया 250/ (पेपर बैक में)



समाज आ इतिहास के समेटत एगो आत्म-संस्मरण के किताब पी राज सिंह

सिवान शहर से 8-10 किलोमीटर पूरुब पचरुखी नाँव के कस्बा चीनी मिल के चलते थोड़ा विशेष स्थान पा जात बा। मिल के चलते पचरुखी के नाँव दूर-दूर ले मजदूर आ किसान जानेले। एह से जवन किसान गन्ना के काम कइले बा, ओकरा स्मृति में मिल के शहर वाला जगह मिल बंद भइला के पचास बरिस बादो टाँकल बा। हमरो स्मृति में पचरुखी के इहे चित्र रहे। कस्बा के चरित्र औद्योगिक हो गइला के कारण ओकरा सामाजिक बुनावटो में कई तरह के रंग जुड़ जाला। किसान जीवन के साथे-साथे आउरो कई गो रंग-रूप लोगन के जीवन के भाग बन जाला आ एह विविधता के चलते ऊ जगह कुछ विशिष्ट हो जाला।

शीर्षक पर थोड़े रुक के विचार कइला पर स्पष्ट होता कि पचरुखी अब लेखक के आइल-गइल कम हो गइल बा; कि उनका बचपन आ युवावस्था के निर्मिति के दौरान पचरुखी के रूप अबहीं गहराई से हिलोर मारत बा कि ओह अनुभवन के कलमबद्ध कइला बिना उनकर जीवन पूर्ण आ पुष्ट ना हो पाई।

किताब लिखे के पीछे भा कवनो संस्मरण लिखे के पीछे चालक शक्ति इहे होला। अब केहू ई सवाल कर सकेला जे एगो छोट स्थान के जनजीवन आ व्यक्तिगत संस्मरण के लिखला-पढ़ला से आमजन कवना तरह से लाभान्वित होई।

डॉ. रंजन विकास का आत्म-संस्मरण के किताब 'फेर ना भेंटाई ऊ पचरुखिया' व्यक्तिगत अनुभव से आगे ले जात बा। उनका पारिवारिक जिनिगी के साथे ओह कालखण्ड के सामाजिक बेवस्था, क्रिया-प्रतिक्रिया के वर्णन बा। एमें भारत का स्वतंत्रता आंदोलन के स्थानीय इतिहासो के देखल जा सकेला। एमें छोट कस्बा के स्थानीय लोग कवना तरे शिक्षित होत रहे, स्थानीय लोग के चिकित्सा के का बेवस्था रहे, परस्पर सम्बंध कइसन रहे, जमींदारी व्यवस्था के रूप-सरूप कइसे-कइसे बहाल होत आइल रहे आ अंत में खत्म हो गइल, एह सब के वर्णन बा। हमरा देखे कवनो संस्मरण खाली व्यक्तिगत भइला के चलते ना बलुक समाज आ इतिहास के विविध रूपन के चित्रण से बहुमूल्य हो जाला।

सारण का स्वतंत्रता आंदोलन में बंगाल से विस्थापित हो के आइल एगो शिक्षित बंगाली परिवार का बारे में हमरा मन में बड़ी सम्मान रहे, बाकिर ओह लोग के सम्पूर्ण जीवन वृत्त स्पष्ट ना होत रहे। ओह परिवार का मुखिया के नाँव

रहे अमरनाथ चटर्जी। पेशा से आयुर्वेदिक डॉक्टर रहले। पचरुखी में रह के आयुर्वेद के प्रैक्टिस करत रहले। मरद-मेहरारू दूनों जन स्वतंत्रता संग्राम में भाग लिहल। जेल गइल लोग। बाकिर आजादी के बाद कवनो पद-प्रतिष्ठा का ओर झाँकहूँ ना गइल लोग। उनकर बेटा अमियनाथ चटर्जी छपरा के रंगकर्म का धड़कन के रूप में कई दशक ले सक्रिय रहले। एह परिवार के खास करके अमरनाथ चटर्जी के पचरुखिया जिनिगी के कहानी एह किताब में हमरा देखे के मिलल। हमार स्मृति में छपरा के स्वतंत्रता आंदोलन के जिनिगी के जवन अधूरा चित्र रहे, खास करके ओह बंगाली परिवार का बारे में, ऊ साफ भइल। एहिजा ई किताब महत्वपूर्ण हो जात बा।

आज के भोजपुरी अइसन भाषा हो गइल बा, जवन घर परिवार के भाषा त बा, बाकिर शिक्षा आ शिष्ट सामाजिक सरोकार के भाषा का रूप में एकर प्रतिष्ठा नइखे। एही प्रतिष्ठा के हासिल करे का प्रयास में डॉ. रंजन विकास के भोजपुरी में लिखल ई आत्म-संस्मरण के किताब फेर से महत्वपूर्ण हो जात बा। एह किताब में खाली पचरुखी के जनजीवन के वर्णन नइखे। सिवान जिला के आउरो क्षेत्रन के वर्णन देखे के मिलत बा, जेकरा से लेखक के संबंध रहल बा। एह खेयाल से स्थानीय इतिहास, जनजीवन आ समाज के वर्णन का लिहाज से ई किताब महत्वपूर्ण हो जात बा। कारण, विज्ञान आ उपभोक्तावाद के चलते व्यक्तिगत जिनिगी आ समाज में बहुत तेजी से परिवर्तन हो रहल बा। बीतल समय के, सिवान आ छपरा के इतिहास का दस्तावेजीकरण के प्रयास लेखक कइले बाड़े। पहिलका संस्करण से तुलना कइला का बाद हम पावत बानी जे एह दोसरका संस्करण में बहुत नया-नया अनुभव आ चित्रो के प्रमाणीकरण का खेयाल से, इतिहास के संरक्षण का खेयाल से लगावल बा। बस एगो शिकायत हमार रह गइल कि चित्रण के तनी आउर बढ़िया से आ बढ़िया कागज पर लगावे के चाहत रहे। संस्मरण आधारित एह तरह के ढेर कुलि किताबन के अबहीं भोजपुरी में जरूरत बा।

पुस्तक : ‘फेर ना भेंटाई ऊ पचरुखिया’

लेखक : डॉ. रंजन विकास

दोसरका संस्करण : 2024,

पृष्ठ: 342, मूल्य : 400/-

प्रकाशक :

भोजपुरी साहित्यांगन चैरिटेबल ट्रस्ट, पटना।



साध के सरगम बजा के

अर्जुन सिंह 'अशांत'

साध के सरगम बजा के का करब हम
रागिनी के रूप जब लहरात नइखे ।

तार बा सुर में, मगर झंकार नइखे
स्वप्न बा हरियर, मगर संसार नइखे
रेत पर अँखिया बिछा के का करब हम
धार के तनिको लहर इठलात नइखे ।

कल्पना के फूल, खिल-खिल के झरत बा
साधना के दीप, बुझ-बुझ के बरत बा
ई दिया दिल में जरा के का करब हम
ज्योति के तनिको किरण मुस्कात नइखे ।

आँख से बरसत विरह के फुलझड़ी में
आरती कैसे उतारीं ई घड़ी में
रूप के चर्चा चला के का करब हम
चित्र तनिको आँख में उतरात नइखे ।

उठ रहल विश्वास पत्थर से पुराना
का करब हम गूँथ के ई दर्द दाना
बाँसुरी अइसन बजा के का करब हम
तृप्ति के जब कंठ कुछ सरसात नइखे ।

प्रस्तोता : डॉ. शशि भूषण सिंह, पटना

स्वर्गीय गंगा प्रसाद अरुण जी का हस्तलेख में उहाँके एगो मनगीत ।



मनगीत

— गंगा प्रसाद अरुण :

(जो० १२३४४१२०४१)

रूप के बसेरा पररूपा के छाँव
अउघाइल गली-गली
निनिआइल गाँव ।

महुआ के गंध झरे अंग योर-योर
ओम के लिकोरा पर आन्ही के जोर
धनिया के बाँहन पर
होरी के नाँव ।

रोज-रोज चउल करे पीपर के पात
बरगछिया टोकल बा सरही बरिआत
लभनउली लखिया के
ठनके गोडाँव ।

लहना-उचारी पर सेठ कुनमुनाय
थवना पर लवना के टैन ढनढनाय
लगन के दुआरी पर
थथमल बा पाँव ।

सुने कोई केहू के कहवाँ सँवास
करिआइल, लाल भइल खोबसन उपहास
अँगना बँडेरी पर
कागा के काँव । *

गजल

डॉ. अनिल कुमार दूबे 'अंशु'

गीत गाके गुनगुनाके ।
जा रहल बा मुस्कुराके ।।

डाह से डाही मरेला ।
नर्क भोगे बजबजाके ।।

मौज में जीये मुसाफिर ।
आस के पंछी उड़ाके ।।

बा शरम के बाग उजड़ल ।
का मिलल परदा सियाके ।।

'अंशु' तहरो प्रीत के सब ।
तोल ली पलड़ा भिड़ाके ।।

संपर्क :

anildubey.anshuji1969@gmail.com

गजल

कुँवर नाजुक

मार पत्थर से कपरा फोरावल गइल
कइके समझौता झगरा ओरावल गइल

केकरो हिस्से में सगरो मुहब्बत रहे
केकरो जिनगी में जहरा घोरावल गइल

न्याय के मुखिया, सरपंच बइठे जहाँ
सब सबूतन के उहवें चोरावल गइल

गाँव में खानदानी के इज्जत बदे
नेह जोरल केहू के छोरावल गइल

केहु केतना मुहब्बत में नफरत भरी
नेह 'नाजुक' से सभके जोरावल गइल

संपर्क :

kunwarnazuk@gmail.com

मोबाइल : 9506427720

समीक्षा

भोजपुरी के पहिल डायरी 'नीक-जबून' : संस्कृति के सुरक्षा कवच

समीक्षक : पंकज तिवारी



डायरी लिखीं कि ना लिखीं ? लिखब त साँच लिखे के परी। बिना कवनो लाग-लपेट के, बिना कवनो अलंकार-शृंगार के लिखे के परी। मन में कुछ दिन तक उधेड़-बुन चलल होई आ ओकरा के जितला के बादे ई डायरी लिखाइल होई। भोजपुरी के कुछ वरिष्ठ साहित्यकार लोगन से जब हम जानकारी लिहलीं त पता चलल कि डॉ. रामरक्षा मिश्र विमल द्वारा लिखित 'नीक-जबून' भोजपुरी के पहिलका डायरी-संग्रह हटे। हम एके बार बइठकी में ई किताबि पढ़ि गइलीं। नीक-जबून के विधा भलहीं 'डायरी' बाटे, बाकिर एकर कथात्मक शैली हमरा के एतना प्रभावित कइलसि कि हमरा तनिको उरेब ना परल, हमरा पढ़े के प्रवाह कहीं से कम ना भइल।

डायरी लिखला के काम पथरीला, कँकरीला जमीन प आँचवाली दुपहरिया में चलला के काम होला आ एहसे ओहमें कहीं-कहीं नाहियो पसन्न परेवाला सामग्री जरूर होले, जहाँ पहुँचि के पाठक या त नाहीं त किताबि बन्न क देला। बाकिर एह किताब में विमल जी के लेखनी कामाल के जादू बिखेरतिया। एहमें कवनो संदेह नइखे कि एकरा में बेलकुल खर बात बतावल गइल बा, मिठका-मिठका गप्प, कडुआ-कडुआ थू, जइसन बात एहमें नइखे।

एक दिन के डायरी 'चलीं, भोजपुरिये में नेवता लिखल जाव' शीर्षक के लिहीं त एहमें एगो रिक्सावाला भाई से भइल बतकही भा पाण्डेय जी से इससे-इशारा में भइल बात आ ओकर एतना झट से बड़ नीमन असर देखेके मिलल कि मन मगन हो गइल। ओह पूरा बात से त हमहूँ सहमत हई आ एकरा माध्यम से ई बतावल चाहत हई कि हमरे घरे अब जो कवनो शादी के निमंत्रण लिखाई त भोजपुरिये में लिखाई।

लेखक भाषा का प्रति बहुत सजग लउकता। डायरी का एह अंश से ई साफ-साफ बुझाता।

"कुछ दिन पहले कोलकाता के एगो प्रसिद्ध अखबार के विशेषांक के मुखपृष्ठ पर बड़-बड़ टह-टह लाल अक्षरन में विजयदशमी पढ़लीं। मन अचकचाइल। बहुत दिन बाद कवनो बुद्धिजीवी कड़ा इस्टेप उठवले बा अपना पूर्वजन पर। आखिर गलत चीज के कब ले झेलत रही आदमी आ ऊहो मीडिया से जुड़ल आदमी।

ताकत आ प्रभुत्व का खुशबू से गमगमात मन शांत कइसे बइठी। एक मन कहलसि कि प्रूफ के गलती होई। दोसरका मन कहलसि कि देखत रहिह, एक दिन 'एकादश' का जगहा 'एकदस' लिखल पढ़ेके मिली। त हम का करीं ? मए गिनती आ पहाड़ा ठीक करे के हमरा के प्रभारी बनावल गइल बा ?”

विजयदशमी आ विजयादशमी का फर्क के माध्यम से लोग कवना तरे मूल शब्द के साथ खेलवाड़ कइ रहल बा, कवना तरे आज का लेखनी में, भाषा में एतना बड़ घाल-मेल चल रहल बा, एकर विरोध 'ये दिल माँगे मोर' पर भइल उनकरा बहस का माध्यम से समझल जा सकता। "हम कहलीं, भाई 'मोर' के जगहा 'और' कहलो पर त कुछ बिगड़ी ना। फेर काहें एकर ओकालत करतारे लोग। हर भाषा में लीखे-पढ़ेवाला लोग विदेशी शब्दन का मोड़ पर कुछ देर रुकिके सोचेले, काहेंकि धड़ल्ले से एकर प्रयोग कइला के मतलब बा व्यंग-बौछार का शुरुआत के नेवता। इहाँका इंगलैंड में पैदा भइल रहीं...जी, एंग्लो इंडियन हई... इहाँ का लेखन पर उत्तर आधुनिकतावाद के असर बा...। एह तरह का जुमलन के अलावा कुछ ना मिली त एगो बिदेशी मीडिया के दिहल अपमानजनक शब्द 'हिंगलिस' त जरूरे सुने के मिल जाई। हमरा सबसे खराब हिंगलिस लागेला जवना के चार भाग में एक भाग हिंदी (हिं) आ तीन भाग अंग्रेजी (ग्लिस) बा"। एहमें उहाँका एह शब्द के गलती से भा जान-बूझिके ओकालत करेवालन के नीमन से धोअले बानी। अक्षर-अक्षर आ शब्द-शब्द के एतना नीमन व्याख्या कइल गइल बा कि उहाँ का पैनी दृष्टि के कायल भइला से केहू अपना के रोकि नइखे सकत।

परिवार आ समाज में दू भा तीन गो पीढ़ी का बीच के जवन खाई बा, ओकरा प एतना नीमन चिंतन एहमें मिलता कि लागता कि ई किताब घर-घर में होखेके चाहीं। एह किताब में बहुत नीमन-नीमन विचार त मिलते बा, ओकरा सड़हीं संस्कृति में गलती से दोहरावल कुछ बातन पर भी लेखक के लेखनी मानल नइखे। ऊ ई बतावल आपन धर्म समझतिया कि हमनी से चूक कहाँ भइल बाटे। एह डायरी के हर बात हवा-हवाई ना होके वैज्ञानिक तरीका से राखल गइल बा। उदाहरण का रूप में छठ पूजा में सबका जबान पर बइठल 'रसियाव' शब्द के लिहल जाव- लेखक अपना स्टाफ रूम में मगन होके गुनगनात रहीं-

"ननदी का बोलिया में बने रसियाव रे

सरगो से नीमन बाटे सईया के गाँव रे।”

गीत सुनला पर ओहिजा हाजिर लोगन के बीच चर्चा शुरू हो गइल कि 'रसियाव का हटे'। खीर के पुरान रूप कहिके ओकरा के गइल-बीतल बतावल जात रहे।

हमरा ई जमल ना। ई कहनाम ह विमल जी के आ आगे ओनहीं का शब्द के जस के तस देखल जाव-

“पहिले के बात आ परंपरा सभ आउटडेटेड कइसे हो जाई भाई ? चाउर में गुर डालिके सिंझावल जात रहे, ओमें दूध ना डलाइ। एकरे के रसियाव कहल जात रहे। सभसे बड़ आपत्तिजनक बात रहे ओह घरी दूध का अभाव के। अब ई कइसे मानि लिहल जाव ? आजु भलहीं गाँवो में दूध मिलल कठिन हो गइल बा, बाकिर पहिले त स्थिति उल्टा रहे। पहिले दूध-दही के कहाँ कमी रहे ? हम आपन पक्ष रखलीं आ कहलीं कि छठि में त खीर ना रसियावे के महातम हटे।” आगे पढ़ला के बाद ऊ चर्चा सार्थक बहस में बदलि गइल बा आ बहुत जरूरी चीज छन के बाहर आइल बा- “रसियाव में दूध डाले के रिवाज पहिले ना रहल।” काहें ना रहल एकर वैज्ञानिक विवेचन भी बा एह बहस में, संस्कार आ संस्कृति पर भी अच्छा बहस भइल बा। हँऽ एगो बात हमरा खटकल कि एह बहस का साथे गीत में आइल भाव पर चर्चा ना भइल, जो भइल रहित त मन जुड़ा गइल रहित। एह तरह के एगो गीत हमरो इयाद आ रहल बा, गीतकार शायद मिर्जापुर के हवें-

रुनुक-झुनुक बाजे पायल तोर पउँवा

बड़ा नीक लागे ननद तोर गउँवा

प्राचार्य डॉ. संजय सिंह 'सेंगर' के दरियादिली एह डायरी के एगो विशेष आकर्षण बा। ई त निश्चित रूप से हर आदमी के पढ़ेके चाहीं। अब लेखको लोग सवाल का घेरा में आ गइल बाड़न, लेखक द्वारा उठावल गइल ईहो विषय बिलकुल सही उठावल गइल बा। कुछ प्रश्न त अबहिनो बा, जेकरा से लेखक लोग पल्ला ना झाड़ि सकेलन। भोजपुरी में अश्लीलता जइसन बिषय पर भी एहमें एगो सार्थक चिंतन पढ़े के मिलल बा। ‘अपने घर में बन्न’ में आधुनिकता का नाँव पर सवार भौतिक सुख कबो-कबो जीवन खातिर कतना क्लेश बन जाला, एह पर गज़ब के सटीक व्यंग बाटे।

‘राखी भाई-बहन के तेवहार कब से’ शीर्षक में नवका पीढ़ी के भटकल ज्ञान के जगावे के जबर प्रयास भइल बा। जातिवाद पर लिखल लेखक के बात त जइसे पूरा किताबे प भारी लागत बा। आई, डायरी के कुछ अंश जस के तस पढ़ल जाव-

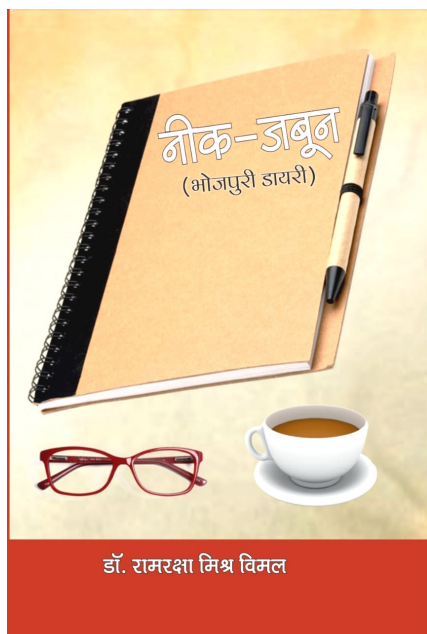
“प्रदूषित वातावरण में फइलल जुमलन का जगह मेहनत के जरूरत बा, तबे गंभीर चिंतन के विकास होई। पहिले भारतीय संस्कृति का चरित्र के समुझे के चाहीं आ तब ओकरा कसौटी प कसिके देखेके चाहीं कि अपने के जवन सोच रहल बानी, ऊ सही बा कि ना। हमरा भारतीय संस्कृति के आदर्श श्रीराम शबरी

के जूठ बड़ि खातरन त उनकर चरित्र लिखेवाला महर्षि बाल्मीकि का छुआछूत के बात करिहन ? महर्षि वेद व्यास के इतिहास केकरा ले छीपल बा ? अब अपनहीं बताई कि का श्रीमद्भगवद्गीता कवनो खास वर्ण खातिर अस्पृश्य हो सकता ? अरे भाई, ओकर त न्यायालयों में कसम खाले लोग । जवना हिंदू संस्कृति में फेड़ के पतड़यो तूरे खातिर फेड़ प चढ़े से पहिले ओकरा के प्रणाम कइल जाला आ ओकरा से अनुमति माडल जाला कि हम अपना जरूरत खातिर राउर पतई तूरल चाहतानी, ओह संस्कृति में केहूँ के दुखी करे के निर्देश ऋषि लोग कइसे दे सकतारन ? ई विशुद्ध काल्पनिक बा आ बाद में जोरल लागता । साँच त ई बा कि हमरा समाज आ संस्कृति में जब-जब कवनो प्रकार के खराबी आइल बा, त ओकरा के ठीको कइल गइल बा । एहू तरह के गड़बड़ियन के दूर कइल जाएके चाहीं अउर प्रतिभाशाली लोगन के आगे बढ़िके शोध आदि का माध्यम से ओह तथाकथित ग्रंथन में संशोधन-परिवर्धन करेके चाहीं ।”

कुल मिला के कहल जा सकेला कि ई किताब पढ़ला से इहे अहसास होता कि हम एगो किताब से ना बलुक एगो संस्कार अउरी संस्कृति से लैस समाज के यात्रा कर रहल बानी, जवना में रहता से भटकल लोगन के भी सुधरे के मौका कदम-कदम प देबे के परयास भइल बा । साँच पूछीं त ई भारतीय संस्कृति के एगो सुरक्षा कवच बा ।

किताबि के नाम : नीक-जबून
लेखक : डॉ. रामरक्षा मिश्र विमल
विधा : डायरी
प्रथम संस्करण : 2019
पृष्ठ : 120
मूल्य : 220/110 रुपए (सजिल्द/अजिल्द)
प्रकाशक :
नमन पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रिब्यूटर्स, कानपुर ।

संपर्क- 9264903459 (दिल्ली)



समय के साखी सृजन-संवाद

आकर्षक आवरण पृष्ठ से सजल, साफ-सुथरा छपाई वाली डॉ. ब्रज भूषण मिश्र का आलोचना पुस्तक 'भोजपुरी साहित्य : समय के साखी' (सृजन-संवाद) के भोजपुरी आलोचना का विकास में एगो सौभाग्यप्रद कदम कहल जा सकता। एह पुस्तक में निम्नांकित क्रम में विभिन्न विषयन के समावेश कइल गइल बा।

- पढ़ने, समझने और अनुभव के बाद : डॉ. रामप्रवेश सिंह

- अपना ओरि से : डॉ. ब्रज भूषण मिश्र

1. प्रगतिशीलता के नाम पर

2. प्रयोजनमूलक भोजपुरी

3. भारतीय कविता में खेती-किसानी

- भोजपुरी लोक साहित्य में खेती-किसानी

- भोजपुरी संत काव्य आ खेती-किसानी

- भोजपुरी देशभक्ति काव्य आ खेती-किसानी

- प्रकृतिवादी कवितन में खेती-किसानी

- भोजपुरी कविता आ बदहाल खेती-किसानी

- भोजपुरी समकालीन कविता में खेती-किसानी

4. भोजपुरी साहित्य में राम-कथा

5. रामकथा विषयक प्रबंध काव्यन के विशेषता

6. भोजपुरी जन-जीवन में श्रीकृष्ण

7. महानायक बाबू कुँवर सिंह

8. राष्ट्रपिता के जय बोलऽ

9. लोकगीतन आ कवितन में महात्मा गाँधी

10. भोजपुरी कविता में श्रम-सौन्दर्य

11. बदलत गाँव के कहानी भोजपुरी कवितन के जुबानी

12. भोजपुरी लोकगीतन में नारी-पीड़ा

13. भोजपुरी गीतन में होली वर्णन

14. लोकधुन चइता

15. पर्यावरण आ भोजपुरी लोक

16. भोजपुरी संस्कृति के बदलत तेवर

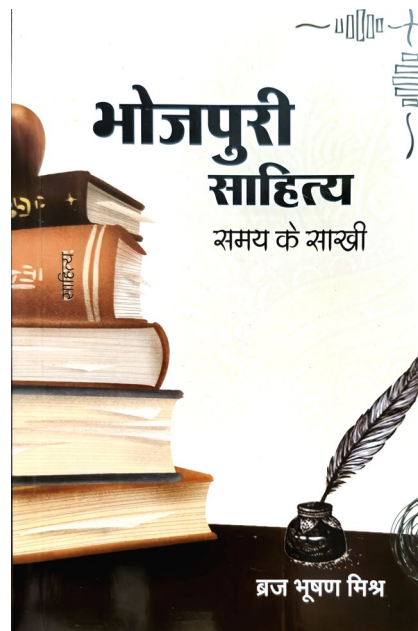
17. कोरोना : एगो वैश्विक आफत
18. प्रणाम-प्रणाम
19. भोजपुरी कथा साहित्य में आम जन-जीवन
20. भोजपुरी कविता में माई-बाबूजी

पुस्तक का भूमिका में डॉ. रामप्रवेश सिंह के कहनाम बा कि "ब्रज भूषण मिश्र सक्रिय और सधे हुए कृतिकार हैं। हर विधा में अबाध रुचि रखने वाले सृजनशील और इमानदार कलाकार। रचना और आलोचना की आंतरिक शक्ति और सीमा को समान भाव से एक विलक्षण पहचान दिलाने वाले कलाकार। उनकी आलोचना की एक और पुस्तक बहुत पहले देखने का अवसर मिला था। 'समय के साखी' का मिजाज और भी संवेदनशील है। क्योंकि इस अनोखी कृति में समय के स्वभाव और समय के अभाव को जितनी बारीकी से आलोचक ने महसूस किया है, उतनी ही सावधानी के साथ उसकी भंगिमाओं और अंतश्चेतना की गहरी सी गहरी और महीन सी महीन भाषाओं को चित्रांकित किया है।"

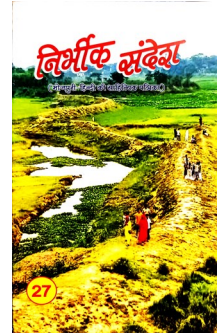
विश्वास कइल जाए के चाहीं कि समय-समय पर डॉ. मिश्र के द्वारा लिखल गइल भिन्न-भिन्न विषयन पर ई आलोचनात्मक निबंध निश्चे भोजपुरी आलोचना के मूल्यवान सोपान सिद्ध होइहें सन।

भोजपुरी साहित्य : समय के साखी
(सृजन-संवाद)
लेखक : डॉ. ब्रज भूषण मिश्र
प्रथम संस्करण : 2025
प्रकाशक
अभिधा प्रकाशन
रामदयालु नगर, मुजफ्फरपुर-842002
पृष्ठ : 176
मूल्य : 250.00

-डॉ. रामरक्षा मिश्र विमल



किताबि : एक नजर में



'फेर ना भेंटाई ऊ पचरुखिया' के चर्चित लेखक डॉ. रंजन विकास बड़ा मनोयोग से एकर भोजपुरी अनुवाद कइले बाड़े। नाँव धराइल बा— "एगो किताब मतारी-बाप खातिर"। हर मतारी बाप, हर गार्जियन के मकारेंको के तरफ से ई एगो नायाब तोहफा त बड़ले बा, ऐतिहासिक महत्त्व के ई कृति नागरिक अधिकार-कर्तव्य का दिसाई भोजपुरी समाज के जागरूको बनावे में मददगार होई।
(हिमांशु रंजन)

पुस्तक : एगो किताब मतारी-बाप खातिर
मूल लेखक : अन्तोन मकारेंको
भोजपुरी अनुवाद : डॉ. रंजन विकास
पहिलका संस्करण : 2025
मूल्य : 399.00 (पेपर बैक)
प्रकाशक
भोजपुरी साहित्यांगन चैरिटेबल ट्रस्ट 203,
विश्व शाकुन्तल अपार्टमेंट मन्दिर मार्ग,
शिवपुरी पच्छिमी, पटना-800023

भोजपुरी अउर हिंदी के साहित्यिक पत्रिका 'निर्भीक सन्देश' का 27वाँ अंक के बड़हन विशेषता ई बा कि एहमें सबसे अधिक निबंध डॉ. रसिक बिहारी ओझा 'निर्भीक' का व्यक्तित्व आ कृतित्व से संबंधित बाटे। छोट कलेवर में पर्याप्त गंभीर सामग्री परोसेवाली ई पत्रिका अपना बाहरियो कलेवर में पर्याप्त आकर्षण राखतिया।

पत्रिका : निर्भीक सन्देश
संपादक : डॉ. अजय कुमार ओझा
पृष्ठ : 36
मूल्य एक प्रति : ₹25
आजीवन : ₹750
मेल :
nirbhiksandesh@gmail.com

सोस्ती सिरी पत्री लिखी...

पहिले छूट गइल रहे

1. सँझवत का प्रवेशांक पर डॉ॰ बलभद्र के प्रतिक्रिया-

रामरक्षा मिश्र जी भोजपुरी के एगो नया पत्रिका शुरू कइले बानी। पत्रिका के नाँव बा 'सँझवत'। सँझवत के मतलब हमनी सब जानत बानी जा। हो सकेला एकदम नयकी पीढ़ी के लोग ना जानत होखे। एही शीर्षक से शारदा पांडेय के एगो ललित निबंधो बा। ई पत्रिका भोजपुरी के शोध पत्रिका के संकल्प के साथे छपल बिया। एह पहिलका अंक में भोजपुरी भाषा, समाज आ संस्कृति के गम्भीर अध्येता प्रो नंदकिशोर तिवारी के इंटरव्यू बा। इंटरव्यू खुदे रामरक्षा जी प्रस्तुत कइले बानी। पूरा इंटरव्यू बहुते महत्व के बा। तिवारी जी भोजपुरी आलोचना के वर्तमान के लेके चिंतित बानी। ई वाजिब चिंता बा। अउर बहुते कुछ बा एह बातचीत में। भोजपुरी शोध पत्रिका के रूप में एकर विकास तबे हो पाई जब एह में आलोचनात्मक आलेख छपी। एह पत्रिका खातिर रामरक्षा जी के हार्दिक बधाई आ धन्यवाद।

2. सँझवत का डॉ॰ कमला प्रसाद मिश्र 'विप्र' विशेषांक पर श्री सूर्यदेव पाठक 'पराग' के प्रतिक्रिया-

सँझवत के डॉ॰ कमलाप्रसाद मिश्र भी 'विप्र' विशेषांक मिलल। धन्यवाद। पढ़ के डॉ. विप्र के लेखकीय व्यक्तित्व के पुरहर जानकारी पा के ओह महान भोजपुरी साधक का प्रति हमारा माथा श्रद्धा से झुक गइल। रउरा ओह अन्हार होत कोठरी में सँझवत देखाके अँजोर क दिहलीं जहाँ ज्योति के बहुत जरूरत रहल ह।

संपादकीय का बहाने कई बिन्दुअन पर विचार बहुत उपयोगी बा। डॉ॰ विप्र जी से बातचीत का क्रम में भोजपुरी से जुड़ल कई तरह से जानकारी मिलल।

'किताबि : एक नजर में' पढ़ के विप्रजी का सब कृतियन के सामान्य जानकारी पवला के बाद विस्तार से जाने खातिर पत्रिका में एक से एक लेख संकलित बाड़े सँ। कुछ रुचिकर संस्मरणन का अलावाँ विप्र जी के एकहो गो किताब के केंद्र में रखके लिखाइल लेख मेहनत का साथे मनगर होके लिखइला से दमगर बन पड़ल बाड़े सँ। अधिकतर निबंधकार परिचित आ भोजपुरी के सेसर कलमकार बाड़े। एहसे 'को बड़ छोट कहत अपराधू'। सचहूँ विप्र जी ओह जुग के भोजपुरी विभूति रहीं, जब भोजपुरी के नाँव लेबेवाला आ कलम चलावेवाला गिनले चुनल लोग रहले। ओहू समय में विप्र जी के लिखल भोजपुरी रचना मील

के पत्थर भइलीं सैं।

सँझवत के ई विशेषांक विप्र जी का सृजन-कर्म के बारे में जानकारी चाहेवाला पाठक वर्ग के संतुष्ट करी, अइसन पूरा भरोसा बा, बाकिर विप्र जी का समूचा कृतियन के समेट के रचनावली के प्रकाशन बहुत जरूरी बा ताकि अगली पीढ़ी उहाँ के साहित्य साधना से लाभ उठा सके। सँझवत का एह विशेषांक खातिर डॉ. विमल के हार्दिक बधाई!

'सँझवत' का अंक-8 'आलोचना अंक' पर प्रतिक्रिया

प्रिय विमल जी,

आँख का दिकत के चलते पढ़ल लिखल नइखे हो पावत। त राउर बात राखे के प्रयास कइले बानी।

बहुत दिन का बाद भोजपुरी का आंगन में सँझवत का अँजोरा आलोचना के समग्र अंक देख के मन निहाल हो गइल। संपादकीय विचार बहुत सटीक आ संतुलित बा। फिराक गोरखपुरी के लिखल भूमिका सचहूँ भोजपुरी खातिर धरोहर बा। श्रद्धेय डॉ. नन्दकिशोर तिवारी जी के आलोचना से जुड़ल तथ्य बहुत ज्ञानवर्धक बा। डॉ. ब्रजभूषण मिश्र जी के लिहल साक्षात्कार पढ़ के अच्छा लागल। आज-काल्ह भोजपुरी में आलोचना लिखनिहार एह अंक में अपना दमदार आलोचना से अंक के गौरव बढ़ा रहल बाड़े। अइसन अंक आगहूँ आवत रहे के चाहीं। एह से भोजपुरी का साथे सँझवत आ ओकरा संपादको के मान बढ़ी।

सूर्यदेव पाठक 'पराग', द्वारा देवेन्द्र मिश्र, C-449-F, इंदिरा नगर,
लखनऊ 226016 मोबाइल 9451462773

भोजपुरी साहित्यिकी 'सँझवत' का आलोचना अंक संपादक रामरक्षा मिश्र विमल की संपादकीय दक्षता के साथ ही भोजपुरी साहित्य में आलोचना की समृद्धि से भी परिचित कराता है। विभिन्न विधाओं में भोजपुरी का साहित्य अपनी मौलिकता सजग बनाये रख कर भी सामाजिक सापेक्षताओं से विलग नहीं हुआ है, इसका पता संग्रहीत लेखों से चलता है। संग्रह में प्रकाशित समीक्षाएँ आश्चस्त करती हैं।

आलोचना केंद्रित यह अंक साहित्येतिहास, शोध, समीक्षा आदि के साथ ही विभिन्न विधाओं के रचनात्मक लेखन की सक्रियता से भी अवगत कराता है। भोजपुरी साहित्य का आरम्भ हर्षवर्द्धन काल का स्पर्श करता है और 1978 ई. तक भोजपुरी में गजल प्रभावित करने लायक क्षमता प्राप्त कर चुकी थी, जैसे

तथ्य उत्साहित करते हैं।

अंक पठनीय बा। भोजपुरी आलोचना के धरातल से परिचित करावऽता आ आगे खाति प्रेरित भी। क्रियात्मक शुभकामना।
ब्रजेश पांडेय, पटना।

सँझवत के इस अंक का व्यापक रूप से स्वागत हो रहा है! बधाई इस स्वस्थ और समृद्ध अंक के लिए।

उदय शंकर सिंह 'उदय', मुजफ्फरपुर।

बहुत बढ़िया आ संग्रहणीय अंक बनल बा। डॉ. रामरक्षा मिश्र विमल जी के लगन, उत्साह के प्रशंसा खातिर शब्द कम बा। भोजपुरी के उत्थान खातिर उहाँका प्रयास के प्रणाम बा।

श्रीभगवान पांडेय, बक्सर।

बहुत नीमन काम भइल। पत्रिका के चलावे के सोचे के चाहीं। जनम देला से बढ़हन काम ह पोसल पालल। आर्थिक मदद से अर्थ निकली, ना त अनर्थ व्यर्थ हो जाई।

एम. साफी

बेहतरीन कार्य। संपादकीय में ज्वलंत प्रश्न उठाए गए हैं, जिन पर गंभीरता से मंथन की आवश्यकता है।

अभिज्ञात, कोलकाता।

भोजपुरी को समृद्ध करने में यह पत्रिका अपनी महती भूमिका में है, इसमें कोई शक नहीं है।

मंजुला श्रीवास्तवा, दिल्ली।

पत्रिका प लीखल बा- आलोचना विशेषांक, बाकी हमरा हिसाब से एह में बेसी सामग्री समीक्षा साहित्य पर बा, अइसन हमार मत बा।

सम्पादकीय सराहे जोग बा। सम्पादकीय कवनो पत्रिका के रीढ़ के हड्डी होला आ हमरा हिसाब से एह पत्रिका के ई अंश बहुत मजबूत बा। सम्पादक एह में खुलि के आ बिना लाग-लपेट के आलोचना पक्ष पर आपन विचार रखले बाड़े। जरूरत बा अब अइसन साफगोई के। आखिर अब ना त कब ? हमरा

नइखे मालुम कि भोजपुरी के विद्वान समीक्षक, आलोचक लोगन के एह पर का प्रतिक्रिया होई, बाकी सम्पादक के साफ मत बा कि आलोचना हमेशा रचना आ लेखन के होखे के चाहीं, कवनो रचनाकार भा लेखक के मुँह देखि के ना। यानी जवन देखीं तवन लिखीं, बनावटी ना। हमार एह पर सहमति बा।

एही में आगे श्री भोलानाथ गहमरी के किताबि 'अँजुरी भरि मोती' पर डॉ. फिराक गोरखपुरी के आपन बात के चरचा बा। फिराक साहब के ई समीक्षकीय पक्ष पहिलहीं से उजागर बा, एह से एह पर हमरा ओरि से कुछ बोलल बेमानी कहाई।

आगे 'हमार पसंदीदा किताबि' शीर्षक से एगो निबंध छपल बा श्री भगवती प्रसाद द्विवेदी जी के, जवना में महेंद्र शास्त्री जी से लेके, डॉ. विवेकी राय जी के "के कहल चुनरी रंगा ल" आ अविनाश चंद्र विद्यार्थी जी के बेटा के नइहर के बहाने उहाँ का बड़ा लालित्य पूर्ण चरचा कइले बानीं, जवन अपना आप में एगो ललित निबंध बनि गइल बा। पठनीय लेख बा।

आगे एही में डॉ. ब्रजभूषण मिश्र के एगो साक्षात्कार छपल बा, जवन आलोचना साहित्य पर बहुत गूढ़ जानकारी दे रहल बा। मिश्र जी के हमनी का भोजपुरी के इनसाइक्लोपीडिया कहेनी जा, जवना के प्रत्यक्ष रूप उहाँ के एह साक्षात्कार में झलकि रहल बा आ भोजपुरी आलोचना साहित्य पर पुरहर, दमगर जानकारी हमनी का मिलि रहल बा। ई साक्षात्कार सभका ध्यान से पढ़े के चाहीं।

एही में आगे एगो 'आकलन' शीर्षक से क्रमवार शृंखला लेखा आलोचने विषय पर कुछ निबंध आइल बाड़े स, जवना में पहिला आलेख त बड़ा मजगर बनि पड़ल बा। ई निबंध बा हिन्दी, संस्कृत आ भोजपुरी के बयोबुद्ध साहित्यकार डॉ. नन्द किशोर तिवारी जी के, शीर्षक बा- "भोजपुरी साहित्य में व्यावहारिक समीक्षा : स्थिति अउर सम्भावना"। विद्वान लेखक एह में बड़ा सिद्धत से हिंदी आलोचना के विधा से शुरू कइके, अंग्रेजी, फ्रांसीसी से होत भोजपुरी पर आवत आवत कुछ मायूस लागे लागत बानीं। साफ नजर आवत बा कि तिवारी जी भोजपुरी आलोचना साहित्य से संतुष्ट नइखीं लउकत, जवन एगो विचार करे वाला विषय बा।

एही कड़ी में भाई कन्हैया सिंह सदय के एगो आलेख बा, जवन मूल रूप से त समीक्षा पर बा, बाकी इहो चुकी आलोचने साहित्य के एगो विधा होला शायद। ठीक-ठीक बा।

अउर अंत में, एही क्रम में डॉ. जय कान्त सिंह 'जय' के एगो आलेख बहुत प्रभावी बनि पड़ल बा, जवन भोजपुरी के एगो समृद्ध साहित्यकार अविनाश

चंद्र विद्यार्थी जी पर बा। एह निबंध में विद्यार्थी जी के बारे में सांगोपांग विवेचन भइल बा, उहाँ के जीवन वृत्तांत से ले के साहित्यिक सफर तक के। ई आकलन एतना रोचक ढंग से प्रस्तुत कइल गइल बा कि अपना आप में खुदे एगो ललित निबंध के आनन्द दे रहल बा।

कुल मिला के ई अंक, भोजपुरी के आलोचना पक्ष पर एगो बरियार दृष्टिपात करत लउकत बा। एही में कुछ पुस्तक समीक्षा पर आलेख बा जवन नीमन बनि पड़ल बा।

सँझवत के ई अंक पठनीय बा आ संकलन में सँजो के राखे जोग बा।
अनिल ओझा नीरद, कोलकाता।

सँझवत एगो अइसन शब्द बा जवना में आजी, माई आ भउजी तीनों का अँचरा में साँझी के दिया क छबि लेके हमनी का बाहरा निकली गइली जा। अब त सभे कुछ उधिया जइसे गइल। बाकी रउआँ लोग दिया बरले बानी जा। एही से एगो आशा बनल रहेला।

हमनी का कवनो लेखक आ रचनाकार ना हई जा। बाकी रउआँ लोग के काम से अपना माटी के खुशबू मिलत रहेला।

संत राज सिंह

सुंदर पत्रिका के लिए कोटिश: बधाइयाँ और शुभकामनाएँ।
डॉ. जे बी पाण्डेय, पूर्व हिंदी विभागाध्यक्ष, राँची विश्वविद्यालय।

अच्छी बन पड़ी है। संपादकीय में आपने आवश्यक एवं बुनियादी प्रश्नों को उठाया है। मुझे भी स्थान मिला है।

डॉ. दिवाकर पांडेय, भोजपुरी विभाग, वीर कुँअर सिंह विश्वविद्यालय, आरा।

'सँझवत' (अप्रैल-२०२५) अंक-८ मिलल। आभार! मुखपृष्ठ आकर्षक लागल। कवनो भाषा के मानकीकरण निरंतर चलेवाली प्रक्रिया होले। एह विषय प राउर सुझाव स्वागतेय बा, लागल रहीं।

'आकलन' खंड के अंतर्गत जहाँ डॉ. नंदकिशोर तिवारी जी के आलेख 'भोजपुरी साहित्य में व्यावहारिक समीक्षा' से एह विधा के कुछ नया वातायन खुलत बा, उहें कन्हैया सिंह 'सदय' के आलेख मुख्य रूप से शास्त्रीय समीक्षा पद्धतियन प प्रकाश डालत बा। डॉ. जयकांत सिंह 'जय' आ भगवती प्रसाद द्विवेदी के आलेखन में अविनाश चन्द्र 'विद्यार्थी' के व्यक्तित्व आ कृतित्व उजागर

भइल बा। डॉ. दिवाकर पांडेय जी के आलेख कविवर शिव नारायण पाण्डेय 'मुकुन्दपुरी' जी के साहित्यिक अवदान प केंद्रित बा। भोजपुरी आलोचना प केंद्रित माननीय संपादक द्वारा लिहल गइल डॉ. ब्रजभूषण मिश्र जी के साक्षात्कार ज्ञानवर्धक बा।

एह अंक में कुल 23 गो समीक्षा प्रकाशित बाड़ी स, जवन परिचयात्मक, व्याख्यात्मक आ स्वतंत्र समीक्षा पद्धतियन प आधारित बाड़ी सन। एह कुल समीक्षन के आपन अलग पहचान आ महत्त्व बा। एह अंक के श्रेष्ठ समीक्षकन में डॉ. सुनील कुमार पाठक, डॉ. शारदा पाण्डेय, डॉ. विष्णुदेव तिवारी, दिनेश पाण्डेय आ पंकज तिवारी वगैरह के नाँव सादर लिहल जा सकत बा। आशा बा, ई लोग भोजपुरी समीक्षा के शिखर तक पहुँचाई।
कन्हैया सिंह 'सदय', खड़गाझार, जमशेदपुर

सँझवत के अंक आठ, अप्रैल 2025 आलोचना अंक के रूप में मिलल। सम्पादक के अपना विशेष परिस्थिति के कारण पाठकन के एगो लमहर प्रतीक्षा करे के परल। बाकिर पत्रिका के सामग्री में जवन विविधता, भाषिक विकास, संरचना के प्रति आग्रह, विषय चयन आ अभिव्यक्ति के प्रौढ़ता के पुकार लउकल, ऊ मन के बान्हि लिहलस। 'जवन सचमुच अनुभव करीं, ऊहें लिखीं' ई भाव यथार्थ लेखकीय व्यक्तित्व के उभारे वाला, आ साहित्य अवरू लोक जीवन, संस्कृति के उजागर करे वाला प्रेरक आह्वान बा। पुस्तक के चयन आ समीक्षा- दूनों मूल्यपरक बा। डॉ. नंदकिशोर तिवारी के लेख गम्भीर आ साहित्यालोचन के नया दिशा देबे के ओर आकर्षित करता। आवरण पृष्ठ के पहला भाग जहाँ साहित्य की ओर खींचता ओहिजा अंतिम चित्र लोकजीवन, भारतीय संस्कृति के प्रकाशाराधन के सशक्त भाषा प्रदान करता।

बधाई ! साधुवाद !

डॉ. शारदा पांडेय

142 बाघम्बरी गृह योजना, भरद्वाजपुरम, प्रयागराज- 211006



धरोहर



भारतेन्दु हरिश्चन्द्र

भारतेन्दु हरिश्चन्द्र के एगो कविता बा, जवना में एगो 'बलिया के तत्कालीन कलक्टर राबर्ट्स का बिदाई के बेरा आ दू गो कविता नया कलक्टर मिस्टर रोज का अगवानी के बेरा लिखाइल रहे।

भोजपुरी कविता

बलिया के तत्कालीन कलक्टर राबर्ट्स का बिदाई पर -

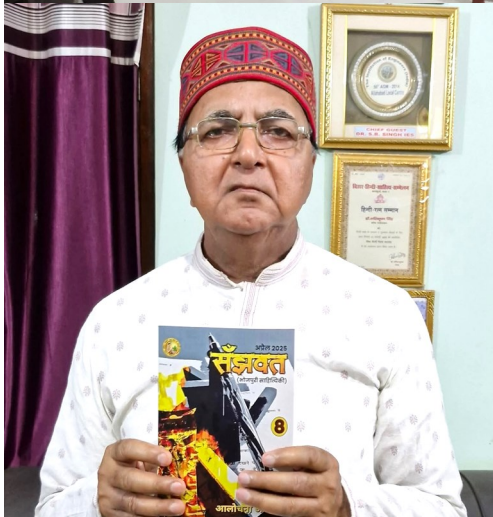
सुनलीं, जे हमनीं से अतना परेम कइ,
लगले इहाँ के अब एजनीं से जाइबि,
इहे एगो हमनी के बड़ दुख लागता जे,
इहाँ के सरीखे अँगरेज कहाँ पाइबि।
इहाँ का तऽ अपना मुलुक अब जाइ भले,
अपने बिलाइतिन में मिल-जुल जाइबि,
हमनीं के हाँथ जोर-जोर के मनाइलें जे,
बलिया दुआब के बिसरि जनि जाइबि।।

नया कलक्टर मिस्टर रोज का अगवानी में -

हमनीं के बलिया दुआब के रहनिहार
रैयत हजूर के कदम तर बानी जा,
हमनी का सोझे-सोझे बात बतिआई, न तो
हिनुई न फारसी न अँगरेजी जानीं जा,
जइसन सरकार करे उपकार हमनीं के,
तइसने हजूर के हमनिओं के मानीं जा,
हमनी के मामिला में अइसन निसाफ होखे,
जवना से साहेबो के नेकिए बखानीं जा।।

जब सरकार सभ उपकार करते बा,
तब अब हमनीं के कवन हरज बा,
हमनीं का साहेब से उतरिन ना होखबि,
हमनीं का माँथे सरकार के करज बा,
आगा अब अवरू कहाँ ले कहीं मालिक से,
अइसे त साहेब से सगरे गरज बा,
उरदू बदल देवनागरी अछर चले,
इहे एगो साहेब से एघरी अरज बा।।

(हवलदार त्रिपाठी 'सहृदय' जी के पुस्तक 'भोजपुरी भाषा आ साहित्य के उद्भव आउर विकास' से साभार।)



भोजपुरी पत्रिका संझवत का किया गया लोकार्पण

बक्सर (एसएनबी)। आर्या एकैदम, बक्सर में शनिवार को डॉ० रामरक्षा मिश्र विमल द्वारा संपादित भोजपुरी पीढ़ीक सैद्धवत का लोकार्पण किया गया। इस अवसर पर भोजपुरी साहित्य में डॉ० बक्सर के संधिव डॉ० अरुण मोहन भार्गव ने भोजपुरी पत्रकारिता की वर्तमान स्थिति में सैद्धवत की महत्ता का प्रतिपादन करते हुए संपादक डॉ० विमल के योगदान की अपन सहानुताही दी। वरिष्ठ आलोचक विष्णुदेव तिवेदी ने अपने वक्तव्य में कहा कि 'संस्कृत सिद्धि नहीं लेते और और आस के हवा

[illegible]

Buxar Top News

सँझवत' ने थामी भोजपुरी
आलोचना की मशाल ..
news.buxartopnews.com

सँझवत' ने थामी भोजपुरी आलोचना
की मशाल ..
<https://news.buxartopnews.com/2025/05/sanjhwat-patrik-lokarpan-buxar-2025.html?m=>

भोजपुरी पत्रिका संझवत से
साहित्य को मिलेगी ऊर्जा

[illegible]

सं
झ
व
त
८
कार्पण



सँझवत

वर्ष : 1, अंक : 2

जुलाई-सितंबर

2019

**भोजपुरी जन-जीवन
में श्रीकृष्ण**

भाषा, साहित्य, संस्कृति अउर शोध के भोजपुरी त्रैमासिक

सँझवत का अंक 2 के आवरण सज्जा : पंकज तिवारी